www.vimalvimarsh.com ISSN : 2348 - 5884

विमल - विमर्श

वार्षिक शोध–पत्रिका

A Multi-disciplinary Refereed Research Journal

Vol. 1 (Special Edition) Year : 6, 2018

INTERNATIONAL CONFERENCE

Executive Editor
Dr. P.K. Jayalakshmi

Editor
Vinay Kumar Shukla *'Vidrohi'*

St. Joseph's College for Women (A)
Reaccredited by NAAC with A Grade
Visakhapatnam - 530 004 (A.P.), Ph. : 0891-2558346
e-mail : sjcwvizag@gmail.com, web : www.stjosephsvizag.com

Vimal Vimarsh - International Peer Reviewed Research Jour

Executive Editor :

Dr. P.K. Jayalakshmi,

HOD Hindi, St. Joseph's College for Women (A), Visakhapatnam

ISSN : 2348-5884

Price : 500/- ($ 20)

Editorial Address :

Vill. & PO-Raipur (Pokhta), PS-Padari
Dist.-Mirzapur -231001 (U.P.)
Mob.- 9415695663
Email : vimalvimarsh@gmail.com

Printed at :

Friendship Graphics,
Ram Nagar, Visakhapatnam.
Phone : 0891-6643352

Vimal Vimarsh - International Peer Reviewed Research Journal

Executive Editor :
Dr. P.K. Jayalakshmi,
HOD Hindi, St. Joseph's College for Women (A), Visakhapatnam

ISSN : 2348-5884

Price : 500/- ($ 20)

Editorial Address :
Vill. & PO-Raipur (Pokhta), PS-Padari
Dist.-Mirzapur -231001 (U.P.)
Mob.- 9415695663
Email : vimalvimarsh@gmail.com

Printed at :
Friendship Graphics,
Ram Nagar, Visakhapatnam.
Phone : 0891-6643352

अनुक्रमणिका

1	नारी सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण आयाम : हिंदी कथा साहित्य के विशेष संदर्भ में	डॉ.एस. कृष्णबाबु	1
2	हिंदी कथा साहित्य में नारी-शक्ति, अस्तित्व के एहसास की	प्रो. एस.ए. सूर्यनारायण वर्मा	6
3	नारी नारीवाद और हिन्दी साहित्य	मिलेना ब्रातोएवा	9
4	'अगर हम लोग अपना पेना बंद कर दे तो फिर हमारी मुक्ति हो जाए'	एस.वी.एस.एस. नारायण राजु	11
5	हिंदी कथासाहित्य : अशिक्षित दलित एवं ग्रामीण महिलाओं के संघर्ष एवं समस्याएँ	डॉ. प्रभा पंत	13
6	नारी मुक्ति की चेतना : मिथकीय उपन्यास 'अभ्युदय' के विशेष संदर्भ में	डॉ.टी. हैमावती	17
7	हिंदी कथा साहित्य में नारी के विविध रूप	डॉ. पी. के जयलक्ष्मी	20
8	मृदुला गर्ग की कहानियों में शोषित नारी	डॉ.एस. दीप्ति	24
9	नारी स्वतंत्रता और हिंदी उपन्यासों की लेखिकाओं का प्रगतिशील चिंतन	डॉ. अनसूया अग्रवाल	28
10	इतिहास और परम्परा के आइने में स्त्री-विमर्श	श्रीमती सूर्यकुमारी पावुला	30
11	वैदिक परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तीकरण	गोपाल	34
12	'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास में चित्रित स्त्री चेतना	माधनुरे राहुल	38
13	हिंदी सिनेमा में स्त्री-विमर्श	डॉ. मोहम्मद शरीफ	41
14	स्त्री-विमर्श का सैद्धांतिक पक्ष	डॉ. कुमार नागेश्वर राव	44
15	इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित स्त्री अस्तित्व का संघर्ष	शेख आजमोद्दीन जैनोद्दीन	47
16	दृश्य-श्रव्य माध्यमों के मिथकीय धारावाहिकों में आदर्श-नारी	सी.एच. निर्मला देवी	50
17	हिंदी साहित्य में नारी : वासना और वेदना के केन्द्र में	कमलेश कुमार बैरागी	53
18	हिंदी साहित्य में नारीवाद	वी. सुगुणा	55
19	'कोरजा' उपन्यास में नारी के बदलते आयाम	डॉ. शेख. बनजीर	59
20	समकालीन हिन्दी उपन्यास और स्त्री-विमर्श	डॉ. आर. श्रीदेवी	62
21	विधवा की नयी छवि प्रस्तुत करनेवाली नारी : हेमवती	धूळीपाळ्ळा राघवराव	65
22	रमणिका गुप्ता की हादसे आत्मकथा में चित्रित सामाजिक संघर्ष	राठोड काशीनाथ	68
23	सावित्री रॉका की कहानियों में स्त्री बनाम समाज	डॉ. के. पद्मा रानी	71
24	चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी चेतना	डॉ. पी. कमला साई	74
25	स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में महिला कथाकार एव स्त्री-विमर्श	डॉ. पी.वी.डी. श्रीदेवी	77
26	जीजी 'निर्मला' : नारी विमर्श के संदर्भ में	एस. जगदीश	82
27	आँचलिक उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्र के विभिन्न आयाम	डॉ. काकानि श्रीकृष्ण	84
28	हिंदी साहित्य में दलित महिला - संघर्ष	चेन्नकेशव रेड्डी	87
29	हिंदी साहित्य में कामकाजी नारी की समस्याएँ	माली गीता	87
30	जैनेंद्र के उपन्यासों में चित्रित नारी समस्यायें	डा.टी. गोविन्दम्मा	91
31	राजी सेठ की कहानियों में नारी चेतना : पारिवारिक मूल्यों के संदर्भ में	डॉ. षम्स अख्तर	93
32	हिंदी साहित्य में स्त्रियों का शोषण और नारी-मुक्ति संघर्ष	एच के रूपा रानी	99

समकालीन हिन्दी उपन्यास और स्त्री-विमर्श

डॉ. आर. श्रीदेवी
गेस्ट फैकल्टी, हिन्दी विभाग,
आंध्र विश्वविद्याल, विशाखापट्टणम।

भारतीय समाज का ढाँचा पितृसत्तात्मक है। इस समाज में नारी को कई उपमाओं से नवाजा गया है। जैसे - लक्ष्मी, सीता, सरस्वती, अनसूया, दुर्गा आदि। समाज में न केवल वह इन उपमाओं का बोझ उठाती है, बल्कि एक पुत्री, बहन, पत्नी, बहु, सास, ननद, भाभी आदि कई भूमिकाएँ को भी निभाती है। जितनी अधिक उपमाएँ और भूमिकाएँ हैं, उतने ही अधिक जिम्मेदारियाँ भी हैं। जितनी अधिक जिम्मेदारियाँ हैं, उतने ही अधिक विमर्श भी हैं। इस विमर्श का संबंध लिंग-भेद, असमानता और पितृसत्तात्मकता से है।इसे समाज में स्त्री-विमर्श का नाम दिया गया है। वास्तव में यह सामाजिक मुक्ति का विमर्श है। जहाँ सर्वहारा का संघर्ष अधिक था उस समाज में यह तेजी से विकसित हुआ।

स्त्री-विमर्श हमारे भारतीय समाज में कई रूपों में विद्यमान है। इसका चित्रण हिन्दी साहित्य में भी किया गया हैं। समकालीन हिन्दी उपन्यासों में तो यह अपने पूरे वजूद के साथ उभरकर आया है। इन उपन्यासों में स्त्री-विमर्श दो स्तरों में बँटा दिखाई देता है। एक तो लोकतांत्रिक स्तर तथा दूसरा पारिवारिक स्तर। लोकतांत्रिक स्तर के शिक्षा एवं रोजगार का अधिकार, सम्पति के मालिक होने का अधिकार और राजनीतिक अधिकार आदि विषय प्रमुख रूप से आते हैं। इसे इस रूप में भी हम समझ सकते हैं कि यहाँ स्त्रियाँ कानूनी सुधारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। उन्हें भी पुरूषों के समान विधिक या संवैधानिक अधिकार मिलने चाहिए। यह संघर्ष आवश्यक रूप से घर और परिवार के दायरे से बाहर है। जहाँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में स्त्रियों के साथ पुरुषों की सहानुभूति भी मिल जाती है, किंतु स्त्री-विमर्श का दूसरा स्तर वह है जिसमें स्त्रियाँ कानूनी सुधारों से आगे बढ़कर घर-परिवार में अपनी स्वतंत्रता एवं अधिकार के लिए संघर्षरत हैं। इसमें स्त्री पर पुरूष के दबाव और अधिकार के विरूद्ध संघर्ष, परिवार द्वारा उनके शोषण के विरूद्ध संघर्ष, कार्यस्थान में उनकी गिरी हुई स्थिति, समाज, संस्कृति और धर्म के द्वारा दिये गये नीचे दर्जे के विरूद्ध संघर्ष तथा बच्चे पैदा करने और पालने के साथ-साथ उत्पादन के दोहरे बोझ के विरूद्ध संघर्ष भी शामिल है। इन दोनों स्तरों पर संघर्ष का केवल एक ही उद्देश्य है कि लिंग-भेद के आधार पर स्त्री और पुरूष के बीच असमानता का जो संबंध है, उसे मिटा देना। समकालीन हिन्दी लेखक यशपाल, भीष्मसाहनी, राजेन्द्र यादव, कृष्णासोबती, मन्नू भण्डारी, कृष्णबलदेव, जैनेन्द्र, ममता कालिया, वीरेन्द्र जैन, मंजुल भगत, प्रभाखेतान,

KINDLE THE LIGHT WITHIN

Estd. 1958

St. Joseph's College for Women (A)

Reaccredited by NAAC with A Grade
Visakhapatnam - 530 004 (A.P.), Ph. : 0891-2558346
e-mail : sjcwvizag@gmail.com,
web : www.stjosephsvizag.com

TRILINGUAL ODE TO YLP

Edited by

Abhishek Challa
Kolachina Shanti

PRUDHVI PUBLISHERS

No. of copies: 200

TRILINGUAL ODE TO YLP

@ KRISHNAVEER ABHISHEK CHALLA , KOLACHINA SHANTI

First Edition: 2017

ISBN NO: 978-81-934206-2-1

Rs. 199/-

[All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any means, without prior permission of the editors. Any persons who does not unauthorized act in relation to the publication may be liable criminal prosecution and civil claims for damages]

PRINTED IN INDIA

Printed & Published by Dr. P. Kishore Kumar, Managing Director, Prudhvi Publishers, D.No. 18-1-16/1, Sadakumpattu Street, Gavarapalem, Anakapalli, GVMC. Visakhapatnam Dist, AP. INDIA - 531002. email: prudhvipublishers@gmail.com, Mobile No: 9030560917and printed at Annapurna Printers, Sadakumpattu Street, Gavarapalem, Anakapalli. GVMC.

Project Completed By

Linguistics Research Society

(Registration No. : 743 of 2015)

C/0

Mr Krishnaveer Abhishek Challa

Secretary, Linguistics

Research Society Address:

MIG – II, 31, House No. 2-27-15,

Sector – 6, MVP Colony,

Visakhapatnam – 530017,

Andhra Pradesh, India

Email Id: com2mass@gmail.com

Cell No. 990874286

मानवता के पुजारी : यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद

(पूज्यनीय गुरू को सादर समर्पित)

लेखिकागण

डॉ.के.शांति

डॉ.आर.श्रीदेवी

About the Book

This book is dedicated to a visionary par excellence – Prof. Yarlagadda Lakshmi Prasad garu. He is our inspiration, our motivation and our strength. This Anthology is our gratitude to this great philosopher. YLP garu is a Leader, a Linguist and a Social Reformer. He is a Champion of Indian Languages. He strived tirelessly for bringing Telugu & Hindi Languages to World Repute and for bestowing upon them International Recognition. His books are Masterpieces and we owe our research contribution to him. Oh YLP! Oh Master! Oh Leader! This Poetry Anthology is our offering to your Lotus Feet……

Rs : 199/-

Published by

PRUDHVI PUBLISHERS
18-1-16/1, Sadakumpattu Street
Gavarapalem, Anakapalli
Visakhapatnam, Andhra Pradesh
Mobile: 90592 80647

ISBN NO: 978 - 81 - 934206 -2-1
9 788193 420621 >

UGC & Ayodhya Research Centre Sponsored International Seminar

भारतीय साहित्य में राम - तत्व

'RAMA's Philosophy in Indian Literature

संपादक

आचार्य एन. सत्यनारायण

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय
विशाखपट्टणम

सह संपादक

डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटि

भारतीय साहित्य में राम तत्व

'RAMA's Philosophy in Indian Literature

संपादक

आचार्य एन. सत्यनारायण

सह संपादक

डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटि

First Edition : 2017

Published by :

SRIKANTH PUBLICATIONS
8-44-7, Old CBI Road, Visakhapatnam

Price : Rs. 500/-

ISBN No : 978-81-920099-8-8

Printed at :

Tirumala Publications
Kakinada. Ph : 0884-2343454, Cell : 99485 98966

Sponsored by :

AYODHYA SHOD SAMSTHAN

For Copies :

SRIKANTH PUBLICATIONS
8-44-7, Old CBI Road, Visakhapatnam

अनुक्रमणिका

1. प्रो. सय्यद मेहरून - नरेश मेहता कृत 'संशय की एक रात' में चित्रित व्यक्ति संघर्ष 1-6
2. प्रो. के. मोहिनी - तुलसीदास कृत रामचरित मानस एक जीवनानुभूति 7-11
3. प्रो.एन.सत्यनारयण - रामचरित मानस – भारतीय संस्कृति का महाकाव्य 12-16
4. डॉ. के. शांति - वाल्मीकि रामायण तथा रामचरितमानस के प्रमुख पात्र-तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में 17-23
5. डॉ. डी. सत्यलता - महाकवि तुलसी के काव्यदर्श- रामचरितमानस के निष्कर्ष पर 24-29
6. डॉ. आर. श्रीदेवी - रामचरिताश्रित हिन्दी उपन्यास 30-32
7. डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटी - आंध्र संस्कृति में भद्राचलरामायण एक अनुशीलन 33-36
8. डॉ. टी. अरुण कुमारी - मानव जीका साधन का अंतिम चरण राम का जीवन 37-41
9. डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी - भारतीय साहित्य में ईश्वर की परिकल्पना 42-43
10. डॉ. एस.दीप्ती - भारतीय राम काव्य में राम तत्व का स्वरुप विवेचन 44-48
11. डॉ. बी. श्रीनिवास राव - तुलसीदास और रामदास की भक्ति भावना का तुलनात्मक अध्ययन 49-51
12. डॉ. बी. सुभा - 'मानस' में रामः मानव संस्कृति का प्रतिनिधित्व 52-54
13. डॉ. दोड्डा. शेशुबाबु - तुलसीदास के काव्य में चित्रित राम भक्ति की भावनाःएक अध्ययन 55-58
14. डॉ. के. पद्मा रानी - कवितवाली में व्यक्त तुलसीदास की राम भक्ति 59-62
15. डॉ. शेख. बेनजीर - वाल्मीकि रामायण और तुलसी मानस में राम के मानवीय गुण 63-67
16. डॉ. एस. एम शब्बीर - कृतिवासी बंगला रामायण और राम चरितमानस 68-70
17. डॉ. कर्रि. सुधा - घर-घर की गाथा तेलुगु राम कथा 71-73
18. डॉ. पी. प्रशांती - राम काव्य परंपरा की लोकप्रियता 74-75
19. डॉ. बी. के. माधवी -भारतीय साहित्य में राम तत्व- तुलसी दास के संदर्भ में 76-78
20. डॉ. के. सुमित्रा - तुलसी के राम - मानस के परिप्रेक्ष्य में 79-81
21. डॉ. वी. सरोजिनी - भारतीय साहित्य में रामःआदर्श व्यक्ति के रूप में 82-83
22. रमेश बाबु दर्शि - रामचरितमानसःभारतीय संस्कृति का महाकाव्य 84-87
23. डॉ. अनुपमा तिवारी - रामकथा- शबरी के संदर्भ में 88-90
24. डॉ. अविनाश जयसवाल - विष्णु के दशावतारों में सातवें अवतार के रूप में राम के चरित्र की विशेषताएँ 91-93
25. डॉ. जी. मोहन नायुडु - तुलसी साहित्य में चित्रित मर्यादा पुरुषोत्तम राम 94-97
26. डॉ. गीता ए जगड़ - आधुनातन युग में राम साहित्य की प्रासंगिकता 98-102

रामचरिताश्रित हिन्दी उपन्यास

डॉ. आर. श्रीदेवी

हिन्दी का राम साहित्य पूर्ण रूप से पुष्पित और पल्वित। फिर भी यह ध्यान देने वाली बात है कि हिन्दी में जितना रामकाव्य लिखा गया, उतना रामकथा का गद्य रूप नहीं लिखा गया। यदि राम काव्य को एक ओर रखे और जितने भी गद्य साहित्य है, उसे एक ओर रखे, तब भी काव्य का पलड़ा ही भारी रहेगा। प्राचीन काल में पौराणिक उपन्यासों का आरंभ हुआ, किन्तु वे उतने लोकप्रिय नहीं हुए। रामकथा का औपन्यासयिक रूप हमारे हिन्दी साहित्य में अपेक्षाकृत कम है। इसका मुख्य कारण है - हमारे पौराणिक उपन्यास। ये उपन्यास रामकथा को सुस्पष्ट रूप में नहीं प्रकट कर सकें। रामकथा के मिथक ने कवियों और नाटककारों को जितना आकृष्ट किया, उतना शायद उपन्यासकारों को नहीं। इस संबंध में रामअवध द्विवेदी लिखते हैं- "साहित्य में उपन्यास की विधा हिन्दी के लिए नई थी, जिसका अविर्भाव और प्रशस्त विकास तब हुआ, जब हिन्दी खडीबोली कविता क्षेत्र रामकथा के यशोगान से भरपूर थी और कुछ लोग रामकथा को नाटक शैली में उतार रहे थे --- उस समय लेखकों के लिए उसे उपन्यास का विषय बनाना कल्पना और बुद्धि की कसौटी थी।"[1] इस कसौटी का सामना करने का साहस उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने भी नहीं किया। फिर भी उन्होंने ही सर्वप्रथम रामकथा को गद्य रूप प्रदान किया। इनकी '**रामचर्चा**' जिसका प्रकाशन 1938 में उनकी मृत्यु के पश्चात किया गया, रामचंद्र की अमरगाथा है। सात कांडों और 34 प्रकरणों के माध्यम से यह कथा लिखी गयी है। लेखक ने इस कहानी को पौराणिक कल्पनाओं और मान्यताओं से नीचे ले जाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने इसे यथार्थ और आदर्श के रूप में रचने का प्रयास किया।

प्रेमचंद ने रामचर्चा की कथा तुलसीदास के रामचरितमानस के आधार पर नहीं, बल्कि वाल्मिकी के रामायण के आधार पर लिखी है। इसमें उन्होंने कथा की छानबीन नहीं कि बल्कि जो कथा सामने थी, उसे ही यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार की रामकथा अक्षय कुमार जैन की '**युगपुरूष राम**' (1954) और रघुनाथ सिंह की '**रामायण कथा**' (1963) में भी सामने आयी, किन्तु रामकथा का सजग उपन्यासीकरण स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ। वास्तव में उपन्यासीकरण का अर्थ रामकथा का संयोजन नहीं है। रामचरितमानस के आधार पर रामकथा को रामजन्म, राम वनगमन, सीताहरण और लंका विजय पाँच शीर्षकों में कथा कृतियों को संयोजित करने का प्रयास विश्वंभर सहाय प्रेमी ने भी किया था, किन्तु यह भी रामकथा पर आधारित उपन्यास का एक नमूना ही बनकर रह गया। वास्तव में इस परम्परा का आरंभ चतुरसेन शास्त्री ने '**वयं रक्षाम्**' (1955) के माध्यम से किया। इसके पश्चात रामकथाश्रित उपन्यासों की संख्या बढती गयी।

चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखित '**वयं रक्षाम्**' हिन्दी में रामचरिताश्रित कथा लेखन का प्रारंभिक उत्थान है। उसमें जिस ऐतिहासिक दृष्टि, राष्ट्रीय मान्यता तथा विराट चरितों की कल्पना का सामंजस्य हुआ, वह पूर्णत: नवीन, अनुप्रेरक तथा रामकथा का सहज बोध कराने वाला सफल प्रयास है। इसकी सबसे बडी विशेषता है - पौराणिक अंधानुसरण से युक्त मानवीय इतिहास के धरातल पर

राम-लक्ष्मण, उनके शत्रु रावण और राम के पूर्वजों और उनके सहयोगियों का ऐतिहासिक, सामाजिक विवेचन। इसमें शास्त्री जी ने एक तरह से सविस्तार मानवीय सभ्यता और संस्कृति के विकास को प्रस्तुत किया है। इसमें राम और रावण के पूर्वजों के इतिहास विवरण प्रस्तुत किया है, वह अन्यत्र नहीं दिखता। इसमें भारतीय संस्कृति का अक्षुण्य भण्डार है। इसमें इतिहास भी है, धर्म भी है और सांस्कृतिक परीक्षण भी है। फलत: इसमें कितना इतिहास है, कितना कल्पना कोई कुछ नहीं कह सकता। डॉ. रामनारायण सिंह मधुर ने कहा – "इस काल का कोई प्रामाणिक इतिहास नहीं है, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में कितनी कल्पना है और कितना इतिहास।"[2] इसी श्रेणी में लिखी गयी इन्दुभूषण की रामकथा '**अहिल्या**' है, जिसकी समूची कथा गौतम मुनि के आश्रम से जुड़ी है। जब राम का आगमन आश्रम में होता है, तब शिला बनी अहिल्या पुन: नारी रूप ग्रहण करती है। इसमें रामकथा के एक प्रसंग मात्र को चित्रित किया गया है। इसी क्रम में नरेन्द्र कोहली के पाँच उपन्यास – **दीक्षा (1975)**, **अवसर(1976)**, **संघर्ष की ओर(1979)**, युद्ध(1979) और **अभ्युदय** रामाश्रित कथा लेखन के इतिहास की सबसे अनूठी उपलब्धि कही जा सकती हैं। इसमें कोहली जी ने अपने नवीन विचारधारा का प्रयोग कर रामकथा को एक नवीन औपन्यासिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। एक वक्तव्य में उन्होंने स्वीकार किया है कि यह सारी रामकथा मेरे सामने एक विशिष्ट अर्थ लेकर जाग उठी। देव तथा राक्षस ये उन्नत शक्तियाँ थीं, जो सारे विश्व पर अपना आधिपत्य जमाना चाहती थीं। आर्य लोग यद्पि देवों के समर्थक थे, फिर भी देवों के कुकृत्यों के कारण उनके विरोधी भी हो चुके थे। आर्येतर जातियाँ जंबूद्वीप की पिछडी जातियाँ थीं, जिन्हें आर्य ऋषि शिक्षित कर रहे थे और आर्य शक्तियों को संगठित कर, आर्येतर जातियों की सहायता से, एक समर्थ पक्ष खड़ा करने की बात इन ऋषियों के मन में आयी होगी। तभी तो विश्वामित्र राम को वन में ले गए। उन्हें राक्षसों की विभीषिका से परिचित कराया। वन-जीवन की कठिनाईयों को दिखाया। देवराज इन्द्र के अत्याचार और अहिल्या के जीवन की करूण कथा सुनाई। उसे सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाई और सीता से विवाह कर एक नवीन आर्य शक्ति जनक से उन्हें बाँध दिया। "इस अनूठे आयोजन में कथाकार ने पुराणसम्मत चरित्रों और प्रसंगों के साथ ही साथ नूतन कल्पनाओं का संयोजन भी किया है। इस रामकथा में एक ओर पौराणिक मिथक की रक्षा है, तो दूसरी ओर आधुनिक समस्या ओं का उद्घोष भी है।"[3]

रामकथा श्रृंखला की एक अन्य कथा सीता की है। डॉ. युगेश्वर ने 'सीता एक जीवन' (1985) नाम से सीता की आत्मकथा के रूप में इसे रचा है। इसमें सीता के जीवन के विविध सूक्ष्म विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके अन्तगर्त लेखक ने रामायण की कथा का मनोविज्ञान और संस्कृति की दृष्टिकोण से पुनर्मूल्यांकन किया है। शूर्पनखा के रूप में सीता के अवचेतन मन में भय का विकास होत है। सीता कहती है – "किसी व्यक्ति का मात्र संस्पर्श भी हमारा भविष्य बन जाता है।

अयोध्या शोध संस्थान, लखनऊ

ISBN No : 978-81-920099-8-8
SRIKANTH PUBLICATIONS
8-44-7, Old [illegible] Road, Visakhapatnam

सरस्वती

ICSAR - 2017

SCIENTIFIC APPROACHES IN RAMACHARITMANAS

रामचरितमानस के वैज्ञानिक दृष्टिकोण

రామచరితమానస్‌లోని శాస్త్రీయ దృక్పథం

संपादक

डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटि

PITHAPUR RAJAH'S GOVERNMENT COLLEGE (Autonomous)

KAKINADA- 533001, Andhra Pradesh, India, Ph : 0884 - 2379480, Fax : 0884 2387888

(Re-Accredited with B grade by NAAC)

Email : kakinada.jkc@gmail.com www.prgc.ac.in

Scientific Approaches in Ramachartamanas

रामचरितमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण

రామచరితమానస్‌లోని శాస్త్రీయ దృక్పథం

संरक्षक

डॉ. सि. कृष्णा

प्राचार्य

संपादक

डॉ. हरिराम प्रसाद पसुपुलेटि

First Edition : 2017

Published by :

P.N.D. Publishers

Vijayawada, Krishna Dist. A.P. (INDIA)

Price : Rs. 650/-

ISBN No : 978-1-9776-9384-6

Printed at :

Tirumala Publications

Kakinada. Ph : 0884-2343454, Cell : 99485 98966

Sponsored by :

AYODHYA SHOD SAMSTHAN

Ayodhya Research Centre

Fizabad, U.P. (INDIA)

57. राम भक्ति और संत साहित्य - गौतम कांबले 214 - 217

58. सामाजिक एवं पारिवरिक परिपे्ंक्ष्य में रामचरितमानस गौस शेक 218 - 220

59. भक्ति आंदोलन का उध्भव - अनुराधा 221 - 222

60. भक्ति आंदोलन के प्'कार - एन .नागराजु 223 - 224

61. भक्ति आंदोलन - डॉ. वि. रमापदमजा 225 - 229

62. गोस्वामि तुलसीदास की रामचरितमानस में जनकल्याण इं ए सरला देवि 230 - 232

63. तुलसीदास और राम भक्ति साहित्य - डॉ .पि .के .जयलक्ष्मि 233 - 236

64. रामचरितमानस के बालकांड और वैज्ञानिक पक्ष -डॉ. जे .श्रीनिवसुलु रेड्डी 237 - 241

65. रामचरितमानस में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का वर्णन- इबरारखाँ 242 - 245

66. तुलसीदास की अव्दैत सादन - डॉ .जी .रमेश बाबु 246 - 248

67. गोस्वामितुलसीदास का स्वतः सुखाय - शेक सादिक पाषा 249 - 252

68. भक्ति के प्'तिपाध्य में कवि तुलसीदास का अत्मसंघर्ष "रामचरित मानस" -डॉ शबीरा बेगम शेक 253 - 256

69. काव्य - काला मूर्ति के रूप में गोस्वामि तुलसीदास एच शैल भवानि 257 - 259

70. रामचरितमानस भारतीय अस्मिता का महत्व -डॉ .आर .श्रीदेवी 260 - 261

71. मानव धर्म एवं राष्ट्रीय एकता का आधार "रामायण" के सुगुण 262 - 263

72. तुलसी काव्य भक्ति और विज्ञान का खान -डॉ .एम .रामनादम 264 - 267

73. तुलसी के काव्य सिध्दांत एन वंशी कृष्णा 268 - 269

74. साम्यवादी कवि तुलसीदास - डॉ विजया चांदावत 270 - 273

75. भारत में भक्ति आंदोलन का विकास - डॉ. बि .आदिनारायण 274 - 275

76. तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में समन्ववादी - बि श्री देवि , डॉ .एन. जि .एमेकर 276 - 279

77. भक्तिकाल की सामन्य प्'वृत्तियाँ वै वेंकट लक्ष्मी 280 - 282

78. रामचरितमानस में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण डॉ डासरि मैलालि 283 - 286

79. भरत में भक्ति आंदोलन डॉ बोड्डु गीतादेवि 287 - 290

80. हिन्दी के मिथ्कीय धारावहिकों में राम तत्व की अवधारणा डॉ एस दीप्ति 291 - 296

81. रामचरितमानस में वर्णित सामाजिक मूल्य डॉ सि एच सीतामहालक्ष्मि 297 - 299

82. मानसकार का वैज्ञानिक चिन्तन डॉ ए एस राव 300 - 302

* * * * *

ISBN No : 978-1-9776-9384-6

रामचरितमानस भारतीय अस्मिता का महाकाव्य

डॉ. आर श्रीदेवी

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा रचित रामचरितमानस नामक महाकाव्य भारतीय अस्मिता का महाकाव्य है अर्थात यह एक ही ऐसा काव्य है जिसके माध्यम से हम भारतीय जनजीवन के प्रत्येक पक्ष का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। वह पक्ष चाहे व्यैक्तिक हो या सामाजिक, धार्मिक हो या राजनैतिक, आध्यात्मिक हो या भौतिक, कुलाचार से संबंधित हो या लोकाचार से प्रत्येक विषय का विस्तृत वर्णन हमें इस महाकाव्य में मिलेगा। हम क्या हैं? भारतीयता क्या है? दूसरे शब्दों में जो कुछ भी हमारा अस्तित्व है उसका विस्तृत परिचय हमें इस महाकाव्य के माध्यम से ही हो सकता है। हम जानते हैं कि महाकाव्य साहित्य की वह विधा है जिसके द्वारा किसी ऐतिहासिक, सुप्रसिद्ध, सच्चरित्रयुक्त, धीर, वीर, गुणसंपन्न, धीरोदत्त नायक के चरित्र-चित्रण के माध्यम से किसी जाति एवं राष्ट्र के सर्वांगीण जीवन का चित्रण इस उद्देश्य से किया जाता है जिससे केवल तत्कालीन व्यक्ति तथा राष्ट्र ही नहीं बल्कि युगों तक मानव समाज प्रेरणा प्राप्त करता रहता है। महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने महकाव्य में लोकनायक मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का जीवन-दर्शन इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रस्तुत किया है। उनके काव्य के प्रतिपाद्य विषय प्रभु श्रीराम हैं –

"जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना।
प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवान ।।"[1]

उदात्त राम चरित्र के माध्यम से गोस्वामी जी ने भारतीय अस्तित्व और गौरव की गाथा गायी है। हमारा दर्शन धर्म, सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, विश्वास, मान्यताएँ आदि कवि की लेखनी से विश्व मानव के अध्ययन का विषय बन चुके हैं। यदि यह कहा जाए कि यह महाकाव्य भारतीय अस्मिता की ही अनादि गाथा का गायन करता है, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा। भारतीय चिंतनधारा का मूल स्त्रोत वेद हैं। वेद की घोषणा है – "सर्व खलु इदं ब्रह्म, नेह्नानस्ति किंचन" अर्थात समस्त दृश्य – अदृश्य जीव जगत उस ब्रह्म का ही स्वरूप है, ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। इसी वैदिक विचारधारा का प्रतिपादन महाकवि ने अपने महाकाव्य में किया है। उनके काव्य के नायक राम "ब्रह्म" हैं। महाकवि लिखते हैं –

"राम ब्रह्म व्यापक जग जाना।
परमानन्द परेस पुराना ।।"[2]

ब्रह्म राम समस्त विश्व में व्याप्त हैं, परमानन्द स्वरूप परात्पर प्रभु और पुराण पुरूष हैं। वे ब्रह्म के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों की व्याख्या करते हुए कहते हैं –

ISBN No : 978-1-9776-9384-6

"अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा।
अकथ अगाध अनादि अरूपा ।।"[3]

निर्गुण और सगुण दोनों ब्रह्म के ही रूप हैं। दोनों अकथनीय, अथाह, अनादि और अरूप हैं। वही निर्गुण ब्रह्म आवश्यकतानुसार साकार हो सगुण रूप धारण करता है। गोस्वामी जी लिखते हैं –

"राम भगत हित नर तनु धारी ।
सहि संकट किए साधु सुखारी ।।"[4]

अयोध्या नृपति महाराज दशरथ के घर पुत्र रूप में जन्म धारण करने वाले ब्रह्म राम ही मानस महाकाव्य के नायक हैं। महाकवि ने उन्हीं के चरित्र का गायन आद्योपान्त किया है। भारतीय चिन्तनधारा में ब्रह्म के अवतरण का हेतु "धर्म की स्थापना" तथा लोकरंजन स्वीकार किया गया है। तुलसी के राम भी इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मनुष्य रूप में अवतरित होते हैं। राम के जीवन का प्रत्येक क्षण लोकरंजन के लिए समर्पित है। उनका जीवन परोपकार की प्रतिमूर्ति है। निस्वार्थ प्रेम, नीति, स्वार्थ और परमार्थ का निर्वाह यदि इतिहास के किसी महापुरूष के जीवन में हुआ है, तो वह महाकाव्य के उदात्त नायक राम के जीवन में। जिनके विषय में महाकवि लिखते हैं –

"नीति प्रीति परमारथ स्वार्थ।
कोउ न राम सम जान जथारथ ।।"[5]

व्यक्ति समाज का अंग है। व्यक्ति का जीवन समाज के लिए है, वह समाज के लिए जीता है। एक व्यक्ति का जीवन समाज के लिए अलोक स्तंभ बन कर उसे दिशा प्रदान कर सकता है। इस सनातन भारतीय विचारधारा का मूर्तिमान स्वरूप हम राम जीवन-दर्शन में पूर्णतया प्राप्त करते हैं। रामचरितमानस में राम जीवन-दर्शन के माध्यम से भारतीय पारिवारिक और सामाजिक जीवन का सर्वांगीण चित्रण मिलता है। महाकवि तुलसीदास ने समाज मनोविज्ञान को भारतीय अस्मिता के महाकाव्य के रूप में रामचरितमानस में अभिव्यक्त किया है। इसमें सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों को विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। जब तक ये धरती रहेगी तब तक तुलसी का महाकाव्य भारतीय अस्मिता के रूप में सदा बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड - गोस्वामी तुलसीदास – पृ.सं. 61/3
2. रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड - गोस्वामी तुलसीदास – पृ.सं. 16/4
3. रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड - गोस्वामी तुलसीदास – पृ.सं. 23/1
4. रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड - गोस्वामी तुलसीदास – पृ.सं. 24/1
5. रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास – पृ.सं. 254/3

डॉ. आर. श्रीदेवी
गेस्ट फैकल्टी, हिन्दी विभाग,
आंध्र विश्वविद्यालय

ओएनजीसी
ONGC

Offshore Platform, HPHT Asset

Odalarevu Onshore Terminal, Eastern Offshore Asset

Consolidating hydrocarbon assets within the country for bringing positive and cohesive synergy to overall performance, ONGC is committed for energy security of the nation by improving the availability of affordable energy for the fast growing economy of the nation.

ONGC's Eastern Offshore Asset and newly formed HPHT Asset based at Kakinada are endeavoring to fulfil those corporate goals by induction of latest state of art oil and gas technologies to surmount the challenges of exploring and exploiting hydrocarbon resources from geologically and geographically some of the most difficult fields of eastern offshore of India.

SAFETY FIRST

Safety and care for environment remain our most important operational attributes

Oil and Natural Gas Corporation Limited

Kakinada, East Godavari District, Andhra Pradesh

Published by
PND Publishers
Vijayawada, INDIA

ISBN 978-1-9776-9384-6
9 781977 693846

EMOTIONAL LANGUAGE

Teaching in English & Hindi: Perspectives & Dimensions

हिन्दी के भाषा शिक्षण में संवेदना के स्वर : दृष्टीकोण एवं आयाम

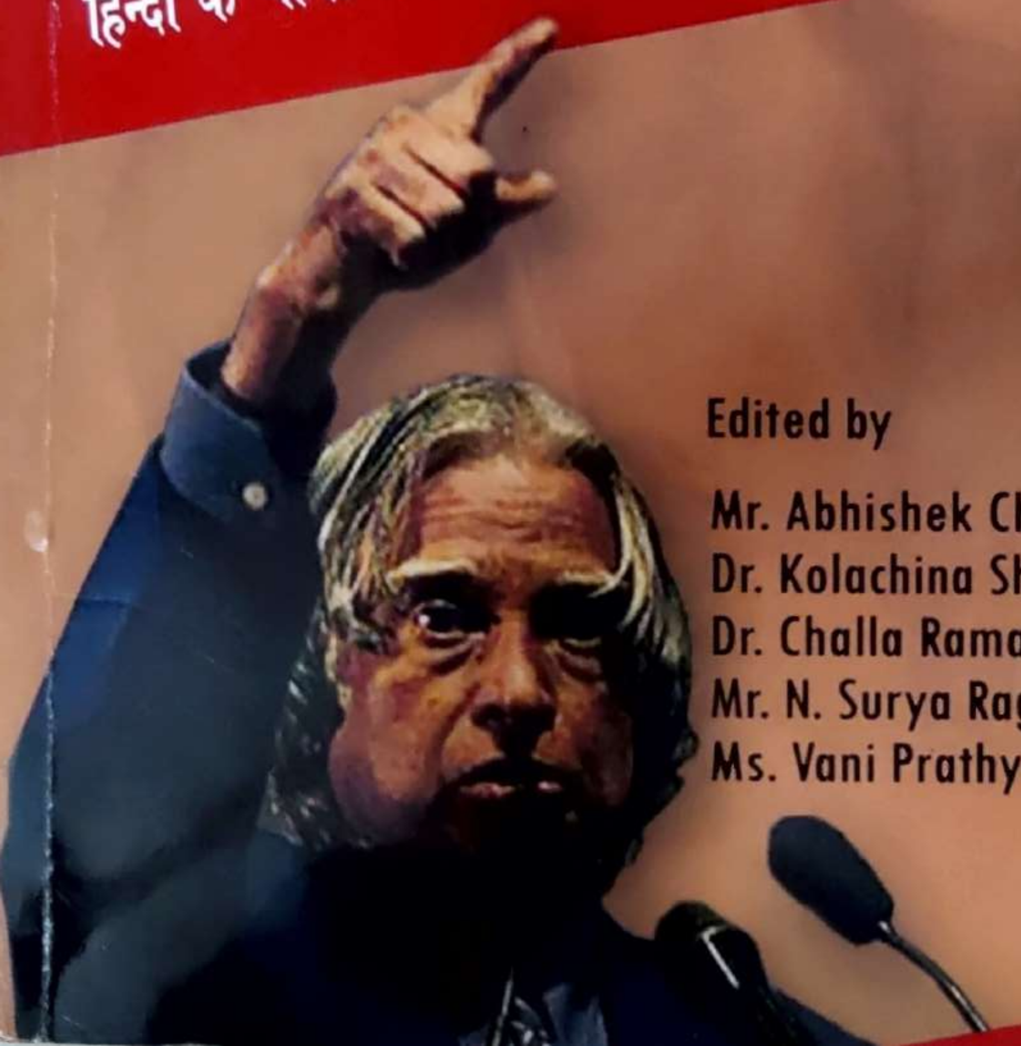

Edited by

Mr. Abhishek Challa
Dr. Kolachina Shanti
Dr. Challa Ramakrishna
Mr. N. Surya Raghavendra
Ms. Vani Prathyusha

PRUDHVI PUBLISHERS

No. of copies: 200

Emotional Language Teaching in English & Hindi : Perspectives & Dimensions

हिन्दी के भाषा शिक्षण में संवेदना के स्वर : दृष्टीकोण एवं आयाम

@ Krishnaveer Abhishek Challa, Dr. K. Shanti, Challa Ramakrishna, Nimmagadda Surya Raghavendra, Dabbiru Vani Prathyusha

First Edition: 2017

ISBN No: 978-81-933370-5-9

Rs. 699/-

Cover & Book Making : Samata Impressions @ 77023 55076

[All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any means, without prior permission of the editors. Any persons who does not unauthorized act in relation to the publication may be liable criminal prosecution and civil claims for damages]

Printed In India

Printed & Published by Dr. P. Kishore Kumar, Managing Director, Prudhvi Publishers, D.No. 18-1-16/1, Sadakumpattu Street, Gavarapalem, Anakapalli, GVMC. Visakhapatnam Dist, A.P. INDIA -531002. email: prudhvipublishers@gmail.com, Mobile No: 9030560917and printed at Annapurna Printers, Sadakumpattu Street, Gavarapalem, Anakapalli. GVMC.

हिन्दी साहित्य में दलित जीवन : कविताओं एवं कहानियों में दलित संवेदना के स्वर

डॉ. आर. श्रीदेवी

हिन्दी साहित्य और दलित जीवनः

प्रस्तावना

दलित शब्द की व्युत्पत्ति दल से हुई है। अतः विभिन्न शब्दकोशों में पास 'दल' का अर्थ इस प्रकार है। मराठी शब्द कोश के अनुसार दल- पर्ण, फूल्की पंखुडी, हिस्सा सैन्य।

अंग्रेजी शब्द कोश के अनुसार - दलित ..... (दलित वर्ग)

हिन्दी शब्द कोश के अनुसार - दलित - कुचला हुआ, दबाया हुआ, नष्ट किया हुआ, ममला हुआ।

इस प्रकार मराठी, अंग्रेजी और हिन्दी शब्द कोशों में प्राप्त अर्थ में समानता है। इसके आधार पर यह भी निश्चित करने की आवश्यकता है कि भारत कब से दलित शब्द का पचलन आरंभ हुआ। प्राचीन दार्शनिक ग्रंथों में कही भी दलित शब्द का प्रयोग नहीं है। उसमें शूद्र का जिक्र मान मिलता है। निष्कर्षतः कय जा सकता है कि दलित का अर्थ है - अनु जाति दबाव हुआ, सताया हुआ, शोषित बेगार व्यक्ति।

नाम देव ब्याल के अनुसार - 'दलित अर्थात अनुजाति, जनजाति, बौद्ध कामागार, खेतहर मजदूर, गरीब किसान, घुमंतू जातियाँ, आदिवासी आदि है (हिन्दी का दलित आत्मकथा साहित्य - डॉ. संजय मुनीख - पृ. सं-८८)२९

कमलेश्वर के अनुसार - दलित वह पूरा वर्गहै जो शोषित प्रताड़ित, बाधित और वंचित है जो अपने जीवन और सपनों का नियंता नहीं है। हाँ जिन्होंने दलित जातियों में जन्म लिया है, वे सामाजिक रूप से और भी ज्यादा शोषित है। (२ जैसा)३०

सामान्यतः दलित शब्द की अर्थ तौर परिभाषा से ज्ञात होताहै कि 'दलित शब्द' में विभिन्न मल प्रचतिल है, फिर भी उनका मूल अभिप्राय एक है। सामाज व्यवस्था में आर्थिक और सामाजिक दृष्टि में पिचडा हुआ, प्रताड़ित और हीन समझा जाने वाला ही

About the Book

Although there are more than five thousand languages spoken across the world, every person will have his own emotional language. Emotional language is a language to which we are attached to, right from childhood. It is the language which a person acquires and is acquainted with right from his childhood. Best example for an emotional language is our mother tongue. We speak in our mother right from our childhood. No one has taught us specifically how to speak in our mother tongue at childhood but listening to people around us, we acquired that language.

In this book, we would like to emphasize the importance of making English & Hindi as our Emotional Languages. They are our link languages, lingua francas, mediums of education and global languages. Indians are exposed to English & Hindi for centuries of years but still we are not proficient in them. At this juncture, there is an urgent need to acquire them rather than mere learning. This is because we fail to culturally and emotionally connect with English & Hindi being Telugus. 'Emotional Language Teaching: Perspectives & Dimensions' is an attempt to develop teaching methods for holistic attribution and acquisition of English & Hindi languages.

Published by

PRUDHVI PUBLISHERS

18-1-16/1, Sadakumpattu Street
Gavarapalem, Anakapalli
Visakhapatnam, Andhra Pradesh
Mobile: 90592 80647

ISBN No: 978-81-933370-5-9

9 788193 337059 >

samata 9492244586

आदिवासी वंचना

उभरते प्रश्न

जनक सिंह मीना

आदिवासी वंचना
उभरते प्रश्न

डॉ. जनक सिंह मीना

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

11. आदिवासी मोर्चा'''काव्य संग्रह में आदिवासी जीवन की व्याख्या
–नीलम मीणा 116

12. राजस्थान की जनजातियाँ
–विकास भड़िया 126

13. आदिवासी बंजारा जनजाति का इतिहास
–ओम प्रकाश 137

14. प्रभात की कविताओं में उपेक्षित वर्गों की समस्याएं
–निर्मला नवल 146

15. आदिवासी साहित्य में चेतना के स्वर
–बलवीर चौधरी 157

16. जनजातियों के कल्याणार्थ संचालित कार्यक्रम एवं योजनाएँ
–डॉ. लेखा जैन 164

17. भारतीय जनजाति और उनकी पारिवारिक व्यवस्था
–डॉ. आर. श्रीदेवी 176

18. भारत में आदिवासी जनजातियों का इतिहास
–शिवांसी, शिल्पी 184

19. वर्तमान भूमण्डलीकरण के युग में दलित
–बद्री नारायण जाट 199

20. भारत में जनजातीय जीवन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
–डॉ. रिषपाल मीना 219

21. आदिवासी वर्ग के मानवाधिकार संबंधी मुद्दे तथा संवैधानिक सुरक्षा
–डॉ. सतीश मीणा 226

22. वर्तमान भारत में जनजाति उत्थान : एक विश्लेषण
–डॉ. लक्ष्मी परेवा 237

23. आदिवासी जीवन : अस्मिता एवं अस्तित्व संघर्ष का दस्तावेज
–के. सुवर्णा 248

24. नारी और आदिवासी समाज
–डॉ. गोपीकिशन चितारा 257

17

भारतीय जनजाति और उनकी पारिवारिक व्यवस्था

डॉ आर [illegible]

कभी–कभी जनजाति शब्द से भ्रामक स्थिति उत्पन्न होती है। [illegible] साधारण लोग इसे जाति के सादृश मानते हैं, किंतु दोनों में काफी अंतर है। बोअस के अनुसार– "जनजाति का अर्थ आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र [illegible] जन–समूह जो एक भाषा बोलता हो और सामान्य संस्कृति का व्यवहार [illegible] हो।"[1] इस प्रकार जाति और जनजाति का अंतर स्पष्ट होता है कि जनजाति के लिए एक निश्चित भू–भाग, एक भाषा, एक स्वतंत्र आर्थिक संगठन, सामान्य संस्कृति, पारस्परिक व्यवहार के नियम और निषेध और समूह [illegible] एक सामान्य नाम का होना आवश्यक है, किंतु जाति के लिए [illegible] आवश्यक नहीं है। जनजातियों को आदिवासी के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय संविधान में इन्हें अनुसूचित जनजाति के नाम से अभिहित किया [illegible] है। ये पहाड़ी और जंगली प्रांतों में रहते हैं। परिणामस्वरूप इनका [illegible] शिकार और खेती–बारी करना है। सामाजिक विकास के परिणामस्वरूप [illegible] इनकी स्थिति में भी काफी सुधार आया है। इसी प्रभाव से इनमें एक [illegible] पारिवारिक व्यवस्था का भी विकास होने लगा है।

ढ़ पारिवारिक व्यवस्था

परिवार व्यक्तियों का समूह है। यह एक सगठन है। यह [illegible] प्रत्येक समाज में किसी–न–किसी रूप में विद्यमान है। परिवार के [illegible] सामान्य लक्षण होते हैं जो प्राय विश्व के प्रत्येक परिवार मे पाये जाते हैं। अतः प्रत्येक परिवार की अपनी एक विशेषता होती है। परिवार [illegible]

यह पुस्तक आदिवासियों की दशा और दिशा पर केन्द्रित है। आदिवासियों का जीवन जल, जंगल और जमीन पर आधारित रहा है जो प्रकृति प्रदत्त हैं। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बात की जाए अथवा भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करते हैं तो आज भी आदिवासी सामाजिक वंचना का शिकार है। प्रत्येक स्तर एवं पग–पग पर आदिवासी उपेक्षित, वंचित, शोषित एव सर्वहारा के रूप में रहा है। शासन प्रशासन की नीतियाँ हो, कानून हो, नियम–विनियम सभी में आदिवासी अपने आप को ठगा महसूस करता है। वैसे तो आदिवासियों को आदिकाल से ही वंचित रखा गया है परन्तु तदोपरान्त भी कुछ प्रतिभाओं ने अपने दम पर वैश्विक पहचान बनाई है जो तथाकथित लोगों को रास नहीं आता और येनकेन प्रकारेण उभरती प्रतिभाओं की जड़ें ऐसे काट दी जाती हैं जैसे भ्रूण हत्या करते हैं। मैं उन लोगों से सवाल पूछता हूँ कि काले धन्धों में कौन लोग लिप्त हैं? भ्रष्टाचार कौन करेगा? जो लोग सत्ता और अधिकार दोनों से वंचित हैं वे कैसे भ्रष्टाचार कर सकते हैं? आज बड़े–बड़े घोटाले, भ्रष्टाचार के मामले, दुष्कर्म की घटनाऐं, मंदिरों के मठाधीशों के काले कामों के कारनामें सामने आ रहे हैं तो जरा दिल पर हाथ रखकर सोचिए ये कौन लोग कर रहे हैं? आदिवासियों के लिए बनी हुई नीतियाँ, योजनाएँ, कार्यक्रम कितने प्रतिशत क्रियान्वित किए जाते हैं? ये सब ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर देना गले की फाँस लगता है। आदिवासियों को बांटने के पूरे प्रयास किये जा रहे हैं और फूट में लूट मचायी जा रही है। प्रस्तुत संपादित पुस्तक में लेखकों ने आदिवासी वंचना, शोषण एवं सर्वहारा लोगों की पीड़ा की विवेचना की है और उनकी समस्याओं, चुनौतियों एवं संभावनाओं को तलाशने का प्रयास किया है।

डॉ. जनक सिंह मीना आदिवासियों पर केन्द्रित 'अरावली उद्‌घोष' पत्रिका के संपादक के रूप में कार्यरत हैं। आप **न्यू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन सोसायटी ऑफ इण्डिया (नेपासी) के महासचिव एवं** राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में सहायक प्रोफेसर के रुप में कार्यरत हैं। डॉ. मीना की अब तक 19 पुस्तकें, सौ से अधिक शोध पत्र, आलेख विभिन्न राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं तथा 80 से अधिक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं में शोध पत्र प्रस्तुत कर चुके हैं।

डॉ. मीना को विवेकानन्द शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा संस्थान, देवघर (झारखण्ड), ऐज्यूकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी, केरला तथा योगमाया मानवोत्थान ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय शिखर सम्मान पुरस्कार, राजीव गाँधी सद्भावना संस्थान, जयपुर द्वारा राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक सम्मान 2015 में जयपुर में प्रदान किया गया। आपको विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, ईशीपुर, भागलपुर (बिहार) द्वारा विद्यासागर सम्मान 2016 प्रदान किया गया। डॉ. मीना को वर्ष 2011 में 'शिक्षा का अधिकार', वर्ष 2014 में 'सामाजिक सद्भाव तथा समावेशी विकास' विषय पर लेखन के लिए भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय स्तर के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है तथा वर्ष 2014 में 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर साहित्यश्री' पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। आप अनेक संस्थाओं के आजीवन एवं कार्यकारिणी सदस्य हैं तथा अनेक पत्र–पत्रिकाओं के संपादक मण्डल में कार्यरत हैं।

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

एल–9ए, सेकण्ड फ्लोर, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, नई दिल्ली–110094
फोन : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

ISBN 978-93-81416-24-2

9 789381 416242

₹950

आधुनिक हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम

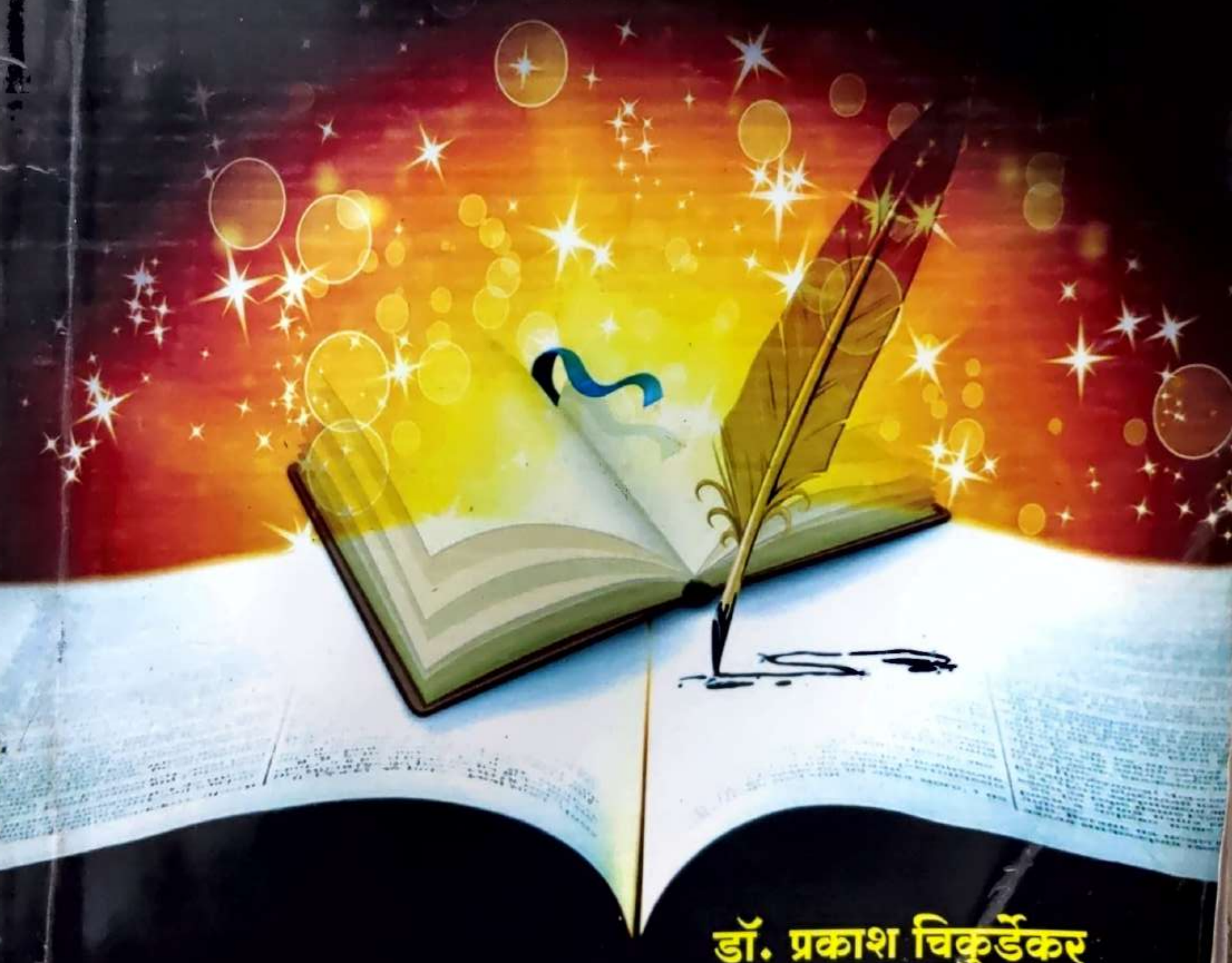

डॉ. प्रकाश चिकुर्डेकर

प्रकाशक :

प्राचार्य डॉ.सौ. सुरेखा बाळासाहेब शहापुरे
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर -416113
तह.पन्हाला, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
संपर्क : 02328-224041, 222820
वेबसाईट : www.ycwm.ac.in
ई- मेल : ycwarana@yahoo.co.in

लेखक : **प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर**
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
हिंदी विभाग ,
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर -416113
तह.पन्हाला, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
संपर्क : भ्रमणध्वनि:- **9404264646**
ई- मेल: prakashchikurdekar@yahoo.com

ISBN: 978-81-933230-1-4

प्रथम संस्करण : **2017**

Printed By,
Shreekant Computers and Publishers,
Opp. Khare Mangal Karyalaya,
Shivaji University Road, Kolhapur Mob. 9890499466

संपादक मंडल: प्रा. डॉ.प्रकाश चिकुर्डेकर
प्रा.डॉ. मनोहर शिंदे
प्रा.डॉ. सुधाकर खोत

मूल्य : **250**/- रुपये

•प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकाशित साहित्य , विचार, कल्पना और शोध तथा शोध संदर्भ संबधित जिम्मेदारी लेखकों की हैं । लेखक - संपादक, संपादक मंडल एवं संस्था तथा महाविद्यालय इससे सहमत हो यह आवश्यक नहीं हैं ।•

"आधुनिक हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम "
(Adhunik Hindi Sahitya Mai Vaishamya ke Vividh Aayam)
By: Dr.Prakash Shankarrao Chikurdekar.

अनुक्रम

अ.क्र.	शोध निबंध विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	आधुनिक हिंदी कविता में वैषम्य के विविध आयाम	प्रा.डॉ.प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर	1
2.	हिन्दी नाट्य साहित्य मे विभिन्न आयाम	डॉ. एम.डी. मजीद मिया	5
3.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में अभिव्यक्त जातिगत वैषम्य तथा गांधीवादी दृष्टि	डॉ॰ गीता पाण्डेय	10
4.	आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में वैषम्य विविध आयाम	डॉ. किरण बी. कामजी	14
5.	प्रभा खेतान के उपन्यासों में परिवेशगत वैषम्यता	आर. श्रीदेवी	17
6.	मृणाल पाण्डे की कहानियों में नारी-चेतना	बी हेमलता	20
7.	वैषम्यपूर्ण समाज में हिंदी नाटकों के वैदिक पात्रों की प्रासंगिकता	डॉ.कुसुम लता	23
8.	हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाओं में अभिव्यक्त आर्थिक वैषम्यताएँ	के. सुवर्णा,	27
9.	आधुनिक हिन्दी निबंध साहित्य में वैषम्य	ए.रमा देवी	30
10.	हिन्दी कथा साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम	अंजली कायस्था	32
11.	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में वर्ग वैषम्य	डॉ बबिता कुमारी	35
12.	आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम	डॉ.अमिता	38
13.	आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में मानवीय वैषम्य	जी. त्रिवेणी	41
14.	हेमन्त कुकरेती की कविताओं में युगीन वैषम्यों का अंकन	एच. शैला भवानी	43
15.	टूटे हुए रास्ते कहानी फुटपाती जीवन के परिप्रेक्ष्य में	डा. बी.लक्ष्मी,	45
16.	आधुनिक हिंदी निबन्ध साहित्य में नारी जागरण की वैषम्यता	डॉ. वि. सरोजिनी	47
17.	शिक्षा क्षेत्र के वैषम्य का एक्स-रे : 'और सिर्फ तितली'	डॉ. एकनाथ पाटील	49

प्रभा खेतान के उपन्यासों में परिवेशगत वैषम्यता

आर. श्रीदेवी
हिन्दी विभाग, आंध्रविश्वविद्यालय
विशाखापट्टणम- 530003
फोन नं. 9491760738, ईमेल- rejeti.shreedevi@gmail.com

आधुनिक हिन्दी महिला उपन्यासकारों की सूची में मन्नूभंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, राजीसेठ, नासिरा शर्मा आदि के साथ जुड़ने वाला विशेष उल्लेखनीय नाम प्रभा खेतान का भी है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की बदलती मानसिकता तथा मारवाडी समाज की नारियों की समस्याओं को विशेष रूप में चित्रित किया है। छिन्नमस्ता, तालाबंदी, अपने-अपने चेहरे, एड्स, पीली आँधी, अग्निसंभवा, आओ पेपे घर चलें, स्त्रीपक्ष आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। जाति और परिवेश को आधार बनाकर लिखे उनके उपन्यासों में परिवेशगत वैषम्यता दृष्टिगोचर है। आओ पेपे घर चलें उनका पहला उपन्यास है, जिसमें उन्होंने अमरीकी औरत की पीडा उसके जीवन के भयावह सत्य को प्रस्तुत किया है। यह हिन्दी का पहला उपन्यास है, जो वैश्विक धरातल पर पारिवारिक विघटन और स्त्री पीडा प्रस्तुत करता है। प्रभाजी के अन्य उपन्यास छिन्नमस्ता, तालाबंदी, अपने-अपने चेहरे तथा पीली आँधी में मारवाडी समाज के गौरवपूर्ण इतिहास एवं पग-पग पर संघर्ष, साहस मेहनत, जोखिम और आतमविश्वास के साथ नारी की व्यथा को मार्मिकता के साथ उद्घाटित किया है अग्निसंभवा एक चीनी महिला आइ.वी. के जीवन की मार्मिक कथा है, तो एड्स उपन्यास में पुरूष के आदर्श प्रेम के साथ-साथ एड्स बीमारी की भयावह स्थिति का मार्मिक चित्रण किया गया है। इस तरह प्रभाखेतान का औपन्यासिक संसार न केवल विषय वैविध्यता से परिपूर्ण है बल्कि परिवेशगत वैषम्यता को भी उजागर करने में सफल है। उनके उपन्यासों में आधुनिक समाज की विभिन्न परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। इनमें समाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि परिवेश को प्रधानत: चित्रित किया गया है।

प्रभाखेतान के उपन्यासों की आधारशिला वास्तव में परिवेशगत वैषम्यता ही है। वे परिवेश से प्रेरणा पाकर यथार्थ को चित्रित करती हैं। उनके उपन्यासों में प्राय: शहरी जीवन का चित्रण मिलता है। पीली आँधी ही मात्र एक ऐसा उपन्यास है जिसमें उन्होंने ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। अग्निसंभवा, आओ पेपे घर चले, एड्स में विदेशी परिवेश है, तो छिन्नमस्ता, अपने-अपने चेहरे, तालाबंदी व स्त्रीपक्ष की कथा महानगरी परिवेश के इर्द-गिर्द बुना गया है। पीली आँधी में ग्रामीण समस्याओं से पलायान कर शहर की ओर रोजी-रोटी कमाते मारवाडियों के जीवन की संघर्षमय दास्तान है। इन आधुनिक उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिवेशों का सम्मिलित चित्रण मिलता है। परिवेश ही कथा का प्राण होता है। उसी से कथा में सजीवता उत्पन्न होती है। इसमें समाज के समस्त परिवेश को अंकित किया जाता है।

सामाजिक परिवेश प्रभाखेतान के उपन्यासों का प्रमुख आयाम है। सामाजिक परिवेशगत वैषम्यता का चित्रण ही इन उपन्यासों का रचना-उद्देश्य है। ये परिवेशगत वैषम्यता ही उनके साहित्य लेखन का प्रेरणास्त्रोत भी हैं। आओ पेपे घर चले में अमरीकी औरत के जीवन के यथार्थ का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है। सत्तर वर्षीय आईलिन दो मृत पतियों और पाँच प्रेमियों की यादों से जीवन का एकाकीपन काट रही है। भोग-विलास में डूबी अमरीकी औरत भीतर से कितनी अकेली असहाय और पीडित है, इसका चित्रण उपन्यास में गहरी संवेदनाशीलता के साथ किया गया है। उन्होंने बहुत संवेदनशीलता के साथ जताया है कि विश्व संदर्भ में नारी की स्थिति भारत की नारी से भिन्न नहीं है। इस प्रकार वैश्विक धरातल पर पारिवारिक विघटन, उच्चवर्गीय जीवन के अंतर्विरोध, बाहर और भीतर के जीवन का तनाव, नकली जिंदगी, पति-पत्नी की टकराहट, रोते-बिलखते बच्चे, डोलर कमाने की भूख से उत्पन्न संवेदन-शून्यता की पीड़ा व दर्द के अनुभव को प्रभाजी ने अत्यंत सूक्ष्मता के साथ अंकित किया है। एड्स में पत्नी और दोस्त की बेवफाई और उससे उत्पन्न एड्स बीमारी से ग्रस्त लाचार पत्नी की पीड़ा और शर्मिंदगी को लेखिका ने बड़ी गहराई से चित्रित किया है। पति भय के कारण किसी और स्त्री से जुड नहीं पाता। रिश्तों की ऐसी ईमानदारी के संबंध में प्रभाजी लिखती

है । राजनीतिक परिवेश के बाद सांस्कृतिक परिवेश आता है । संस्कृति से तात्पर्य संस्कार से है । बाबू गुलावराय ने संस्कृति के विषय में कहा है – संस्कृति शबद का संबंध संस्कार से है जिसका अर्थ है संशोधन करना , उत्तम बनाना ।"[5]

प्रभा खेतान के उपन्यासों में विदेशी एवं भारतीय संस्कृति की झलक देखते ही बनती है । ये भारतीय संस्कृति का अखण्ड भंडार ग्राम ही हैं । ग्रामीण संस्कार हमारी भारतीय संस्कृति का पहचान है । लेकिन नगरों से प्रक्षेपित सभ्यता के कारण वहाँ की संस्कृति का मौलिक रूप क्षत-विक्षत होने लगा है । ग्लोबल दुनिया के धक्कों से एक नवीन संस्कृति सिर उठा रही है । प्रभाजी के उपन्यासों में इन परिवर्तनों को देखा जा सकता है ।

आओ पेपे घर चले, अग्निसंभया और एड्स इन तीनों उपन्यासों का ताना-बाना अमेरिका, हांगकांग, कोरिया की धरती पर बुना गया है । परिवेश में गूँथे इन उपन्यासों के कथानक अपने परिवेश से अछूते कैसे रह सकते हैं । आओ पेपे घर चलें में विदेशी भूमि की दौड़ती भागती फास्ट लाइफ पर प्रकाश डाला गया है । अमेरिका समाज का स्त्रीपुरूष अपनी रोजी-रोटी के लिए सुबह से शाम तक दौड़ता भागता है । रफ्तार की कमी मानो असफलता का संकेत है । सत्तर वर्षीय आइलिन सत्तर की स्पीड से गाडी चलाती है । अग्निसंभवा की आई.वी अपने काम में इतनी मस्त-वयस्त है कि खाना-पीना भी भूल जाती है । महत्तावाकांक्षी इतनी है कि दिन में 18 घंटे भी काम करके संतुष्ट नहीं होती । पति के साथ जीवन-भर एक घूँटे में बँधकर रहना भी यहाँ की संस्कृति नहीं है । पत्यिक्ता मरील अपने पति के लिए कहती है – "भाग गया साला किसी बीस बरस की लड़की को लेकर । कोर्ट का दरवाजा खटखटाने पर आज कल हजार डॉलर महिने भेजता है । बास्टर्ड ।"[6] इस तरह विदेशी संस्कृति में टूटते परियासरों को जोड़ने का हंगामा नहीं है । एड्स का नायक पत्नी की बेवफाई से नाराज नहीं है । वह उसे माफ कर देता है । इस प्रकार लेखिका ने विदेशी संस्कृति का वर्णन बडी सूक्ष्मता से किया है । नये वर्ष की पार्टी, डांस, शैंपन, मनोरंजन के नाम पर ड्रामा-शो इत्यादि का वर्णन उनके जीवन-मूल्यों की परिभाषा और जीवन-दर्शन का परिचय दे जाता है ।

प्रभाखेतान ने भारतीय ग्रामीण और शहरी दोनों संस्कृतियों का चित्रण अपने कथानक में शामिल किया है । उनके ग्रामीण परिवेश का एकमात्र उपन्यास पीली आँधी में विवाहोत्सव, तीज-त्यौ हारों पर मचाया शोर-शराबा आदि का चित्रण बडी ही जीवंतता के साथ किया गया है । लोकगीत गाया जाता है । घर में कोई मर भी जाए तो श्राद्ध भी बडे धूमधाम के साथ मनाया जाता है । नए कुएँ से पहली बार पानी निकालने के लिए अनेक रस्में निभाई जाती हैं । रेगिस्तान में जल की धारा अमृत के समान होती है । लगडियाँ बाबा के नाम पर राती जुगा होता है ।
"चूरमें का प्रसाद किया गया --- कोई दो सौ आदमियों को तो जीमने बुलाया गया था । कुएँ की सारण ढालू रखी गयी ताकि बेचारे बैलों को मेहनत कम पड़े ।"[7] यहाँ टोना-टोटका, नजर लगना आदि रूढियाँ और जोकाचार ग्रामीण संस्कृति के परिचायक हैं । इसी प्रकार लेखिका ने शहरी संस्कृति का चित्रण छिन्नमस्ता, अपने-अपने चेहरे, तालाबंदी, स्त्रीपक्षा इन चारों उपन्यासों में किया है । तालाबंदी उपन्यास में लेखिका ने घर चारदीवारी से उठकर वयापारी दुनिया का परिचय कराया है । वयापार की दुनिया में अपने-अपनों से दूर होते, रिश्तों का टूटना, परिवारों का टूटना आदि चित्रण लेखिका ने यर्थाथ के धरातल पर चित्रित किया है । छिन्नमस्ता और अपने –अपने चेहरे, स्त्रीपक्षा संयुक्त परिवार में स्त्रियों के बिगड़ते रिश्तों की टकराहट की दास्तान है । छिन्नमस्ता भारतीय रूढिवादी समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि प्रभाखेतान के उपन्यासों में कथानक की वैषम्यता के साथ-साथ परिवेशगत वैषम्यता भी दृष्टव्य है । यही उनके कृतियों का सौंदर्य भी है । आधुनिक परिवेश में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वातावरण में आये विभिन्न परिवर्तनों का चित्रण करते हुए लेखिका ने कथ्य-उद्देश्य को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है । वैषम्यता से उत्पन्न सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलूओं के चित्रण में भी अपनी कुशलता का परिचय दिया है ।

सदर्भ ग्रंथ सूची :

1. एड्स – आज – पूजा वार्षिकांक – पृ.सं. – 84
2. पीली आँधी – प्रभाखेतान – पृ.सं. – 185
3. स्त्रीपक्षा – जनसत्ता, सबरंग 6 जुलाई – 2000, पृ.सं. – 20
4. एड्स – आज, पूजा, वार्षिकांक – पृ.सं.- 65
5. भारतीय संस्कृति की रूपरेखा – बाबू गुलाब राय – पृ.सं. 3
6. आओ पेपे घर चलें – प्रभाखेतान- पृ.सं.- 24

Shree Warana Vibhag Shikshan Mandal's

Yashwantrao Chavhan Warana Mahavidyalaya, Warananagar

Email: ycwcwarana@yahoo.co.in Website: www.ycwm.ac.in

ISSN : 2348-4225

योग्यता

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका

Volume : 4 Issue : 3 July - Septmeber, 2017

Humanities
Social Sciences
Commerce & Management
Language and Literature
Development Studies
Law
Art

Yogyatha Publications

क्षमता ज्ञान प्रतिष्ठा

International referred

Yogyatha Publications
International Referred Research Journal

संपादक डॉ. डी. सत्यलता

परामर्श - समिति

आचार्य पी. आदेश्वरराव
आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद
आचार्य बालकवि बैरागी
आचार्य एस.ए. सूर्यनाराण वर्मा

प्रबन्ध - सम्पादक

डॉ. डी. सत्यलता

सम्पादक - समिति

प्रो. सैय्यद मेहरून
प्रो. एन. सत्यनारायण
प्रो. बी. मोहिनी
प्रो. परिमला अम्बेकर
प्रो. सी.एच. अन्नापूर्णा
प्रो. एस.वी.एस.एस. नारायण राजू
प्रो. ज़हरा अफ़जल कुद्री
प्रो. अब्दुल अलीम
प्रो. सोहन राज तातेर
प्रो. रोज़ेर विय्येम्मर्स
प्रो.जी. अक्कु भोट्लु शर्मा
प्रो. एस. वी. रमणा
डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी
डॉ. पठान रहीम खान
डॉ. एन. लक्ष्मी अय्यर
डॉ. के विक्टर बाबू
डॉ. केटूट टोन्डर
डॉ. ज़ोरन उज्सै

सह - सम्पादक

सी. एच. सत्यनारायण
डॉ. जी.के.डी. प्रसाद
डॉ. के. अर्जुनुडु
डॉ. वाई. सुरेशबाबू
डॉ. आर. श्रीदेवी
हितेश कुमार मिश्रा

ISSN : 2348 - 4225 ▶ Volume : 4 ▶ Issue : 3 ▶ July - September, 2017

Dr. N. Lakshmi Ayyar
Dept. of Hindi
Central University of Rajasthan

Prof. (Dr.) Sohan Raj Tater
Former Vice Chancellor
Singhania University, Rajasthan

IKETUT DONDER
Depasar State Institute of Hindu Dharma
Indonesia

Dr. Zoran Vujisiae
Rector, St. Gregory Nazianzen Orthodox
Institute Universidad Rural de Guatemala,
G.T. U.S.A.

Prof. Roger Wiemers
Professor of Education
Lipscomb University, Nashville, USA

Dr. P.K. Jayalakshmi
Visiting Professor
Sofia University, Bulgaria

Dr. Shanthi
Lecturer, Dept. of Hindi
Gayatri Vidya Parishad
Visakhapatnam

Prof. G. Akkubhotlu Sarma
(Retd.) Dept. of Sanskrit
Andhra University, VSP.

Prof. M.V. Ramana
(Retd.) Dept. of Sanskrit
Andhra University, VSP.

Prof. S. Mohan Rao
Dept. of Telugu
Andhra University, VSP.

Prof. B. Ratna Kumari
Director, Dr. Durgabai Deshmukh
Centre for Women's Studies
Andhra University, VSP.

SUB - EDITORS

Ch. Satyanarayana
Dept. of Physical Education
Andhra University, VSP

Dr. G.K.D. Prasad
Post Doctoral Fellow
Dept. of Journalism, A.U.

Dr. K. Arjunudu
Asst. Professor (c)
Dept. of Geology, A.U., VSP

Dr. Y. Suresh Babu
Sr. Lecturer in EEE
Govt. Plytechnic, Dharmavaram

Dr. R. Sridevi
Dept. of Hindi
Andhra University, VSP.

Hitesh Kumar Mishra
Uday Publishing House
Visakhapatnam.

अनुक्रम

(CONTENT)

1. शिक्षा का महत्व : मूल्य हीनता की स्थिति — 01-08
   आचार्या सैय्यद मेहरुन
2. जनवादी साहित्यकार वीरेन्द्र जैन — 09-12
   आचार्य एस.ए. सूर्यनारायण वर्मा
3. विश्वभाषा हिन्दी का स्वरुप — 13-16
   आचार्य एन. सत्यनारायण
4. तमसो मा ज्योतिर्गमया — 17-21
   आचार्या बी. मोहिनी
5. इक्कीसवीं सदी में हिन्दी - जनसंचार माध्यम — 22-28
   डॉ. के. शांति
6. हिन्दी शिक्षण : भाषा का भावी रूप — 29-35
   डॉ. डी. सत्यलता
7. हिन्दी साहित्य पर गाँधी-व्यक्तित्व की अमिट छाप — 36-44
   डॉ. आर.श्रीदेवी
8. अंतर्राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से हिन्दी — 45-48
   डॉ. वी. सरोजिनी
9. दक्षिण भारत में हिन्दी के अध्ययन व अध्यापन की समस्याएँ — 49-51
   डॉ. कुमार नागेश्वरराव
10. साहित्य अध्ययन के प्रति छात्रों में रुचि — 52-56
    डॉ. के. पद्मा रानी
11. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के पठन - पाठन की समस्याएँ — 57-60
    डॉ. शेख बेनजीर

हिन्दी साहित्य पर गाँधी-व्यक्तित्व की अमिट छाप

डॉ. आ
आन्ध्र विश्वविद्यालय,

गाँधीजी का नाम सुनते हमारे मस्तिष्क पर उनके व्यक्तित्व की छा आती है। सत्य-अहिंसा के पुजारी बापू का व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा है। उनके शौर्य और साहस के समक्ष हिमालय भी झुकता है। धर्म और उनके जीवन के अंग थे। उन्होंने सारे भौतिक सुख-सुविधाओं को तिलांजलि उनका व्यक्तित्व सत्य और प्रेम से परिपूर्ण, आत्मबल से अभिभूत था। व्यक्तित्व से सारा संसार परिचित था। उनकी विचारधारा उनके मत को सभी स्वीकारते थे, फिर समाज के प्रतिनिधि साहित्यकार कैसे इससे अछूते रह सक हिन्दी साहित्यकारों ने मुक्त कंठ से उनका यशोगान किया। उनकी कृति गाँधी-व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। मुख्यतः कविगण व्यक्तित्व पर मोहित थे। सुमित्रानंदन पंत, मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी जयशंकर प्रसाद, अंचल, रामकुमार वर्मा, सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियों ने दशकों इनका कीर्ति-गान किया। इनके प्रगीत, गीत, कविताओं, काव्य, खंड महाकाव्यों आदि पर गाँधी-व्यक्तित्व की झलक मिलती है।

गोकुल शर्मा के **'गाँधी गौरव'**, सोहनलाल द्विवेदी के **'सेवाग्राम'** तथा रघुशरण के **'जन सेवक'** आदि रचनाओं पर गाँधी-व्यक्तित्व का प्रभाव दृष्टव्य सुमित्रानंदन पंत ने तो अपने विशाल महाकाव्य में गाँधी को एक पात्र के रूप चित्रित कर दिया है। पंतजी उनके मांसहीन, रक्तहीन, अस्थिपंजर मात्र शरीर शुद्ध-बुद्ध आत्मा पाते हैं, जिसमें चिर पुरातन, चिर नूतनता का अनुपम संगम जो जीवन की पूर्ण इकाई है। यह भारतीय संस्कृति को अमर करने वाली आधारशीला है। पंतजी कहते हैं –

"तुम माँसहीन तुम रक्तहीन हे अस्थिशेष, तुम अस्थिहीन
तुम शुद्ध आत्मा केवल है चिर पुराण हे चिर नवीन

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी के काव्य का सांस्कृतिक अध्य...
मृदुला द्विवेदी, पृ.सं. 27.
2. बापू – सियारामशरण गुप्त, पृ.सं.
3. राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी के काव्य का सांस्कृतिक अध्य...
मृदुला द्विवेदी, पृ.सं. 27, 28.
4. वही, पृ.सं. 28.
5. वही, पृ.सं. 28.
6. वही, पृ.सं.27, 28.
7. कुरूक्षेत्र – रामधारी सिंह दिनकर, पृ.सं.27, 28.
8. हिमकिरीटनी – माखनलाल चतुर्वेदी, पृ.सं.
9. ठाकुर का कुआँ – प्रेमचंद, पृ.सं. 84,85
10. निराला की साहित्य साधना – पृ.सं.
11. ध्रुवस्वामिनी – जयशंकर प्रसाद, पृ.सं.
12. गाँधी विचार साहित्य – डॉ. सुमन जैन, पृ.सं. 30

Yogyatha International Research Journal ISSN : 2348-4225

Subscription Rates

India

Institutions 1000.00

Individuals 1000.00

All Other Countries (Air Mail) : $ 175.00

Forthcoming Issue (December, 2017)

The Editorial Board Welcoms scholarly articles for the December 2017 issue of Yogyatha International Research Jounral. The articles should written with proper methodology. The selected articles will be published in the journal. The articles should reach the Editor on before November, 2017. In addition to the hard copy of the articles on A4 size Paper, the authors should also send the same only in .pdf format through e-mail.

Book Reviews amd books for review should be sent to the Book Review Editor.

For all contributions, correspondences and discussions, mail to Editor-in-Chief.

Yogyatha Publications

क्षमता ज्ञान प्रतिष्ठा

International referred

Yogyatha Publications

Dr. D. Satyalatha

D.No. 39-14-30, Mona Heights, NH-5,
Madhavadhara, Visakhapatnam - 530 007.
Andhra Pradesh, India. Cell : 98859 10709
email : satyanarayana@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी

21 - 22 फरवरी 2017

ISBN 13978-82/920099-3-3

हिन्दी का भविष्य :
वैश्विक स्तर पर विकास की संभावनाएं और चुनौतियाँ

विश्व बन्धु

संपादक
डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी

विश्व-बंधु

राष्ट्रीय संगोष्ठी विशेषांक

हिन्दी का भविष्य : वैश्विक स्तर पर विकास की संभावनाएं और चुनौतियाँ

21-22 फरवरी 2017

संरक्षक

सिस्टर. आलिस मेरी

डॉ. सिस्टर. षैजी पी.डी.

प्रधान संपादक

डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी

परामर्शदाता-मंडल

डॉ. सिस्टर. एन.डी. वेरोनिका

डॉ. एस. कृष्ण बाबु

आचार्य एस.ए.एस.एन. वर्मा

संपादक-मंडल

डॉ. एस. दीप्ति

श्रीमती सीएच. निर्मला देवी

श्रीमती के. सुवर्णा

संत जोसफ़ महिला महाविद्यालय (स्वायत्त)

St. Joseph's College for Women (A)

Reaccredited by **NAAC** with **A** Grade

Visakhapatnam - 530 004 (A.P.), **Ph. : 0891-2558346**

e-mail :sjcwvizag@gmail.com, web : www.stjosephsvizag.com

Vishw Bandhu - National Seminar Souvenir

Edited by : Dr. P.K. Jayalakshmi, HOD Hindi, SJC

ISBN : 13978-82/920099-3-3

Publisher :

Quality Books Publishers & Distributors

15, Siddhartha Nagar, Gooba Garden,

Kalyanpur, Kanpur-208016 (U.P.)

Mob : 09044344050

Email : qualitybooks.knp@gmail.com

Printers :

Friendship Graphics

Visakhapatnam

0891-6643352

---

* इस विशेषांक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक-मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

23	प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी	सुकन्या चल्ला	
24	राष्ट्रीय एकता में हिदी का योगदान	के.सुवर्णा	
25	प्रशासनिक भाषा के रूप में हिन्दी	Dr. S. Abdul Muneer	
26	समर्थ हिन्दी असमर्थ हम (रोजगार के संदर्भ में)	डॉ. आर.श्रीदेवी	
27	हिंदी का भविष्य : देश और दुनिया में	ई. रवि कुमार	
28	हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य	सत्यन्नारायण गादे	
29	हिन्दी पत्रकारिता की दशा और दिशा	बी.अरूंधति	
30	विश्व भाषा के रूप में हिन्दी	बी.श्रीलता	60
31	विज्ञान में हिन्दी	विजया चंदावत	62
32	दक्षिण में हिन्दी शिक्षण की स्थिति, समस्याएँ और समाधान के उपाय	पी. एस. एस. एस. एस. शार्वाणी	64
33	भारत में हिन्दी की स्थिति	जे.कृष्णवेणी, श्री जी.कृष्ण	66
34	तकनीकी शब्दावली	के. के. वेणी	68
35	हिन्दी इलैक्ट्रानिक माध्यम और रोजगार	हरिदास्यं रमादेवी	71
36	भविष्य में हिन्दी	प्रो. सी. अन्नपूर्ण	72
37	वैश्वीकरण अैर हिन्दी	डॉ. वी. कांचनमाला	74
38	वैश्विक स्तर पर हिन्दी	डॉ. के.वी.एल. संध्या राणी	76
40	भूमंडलीकारण के संदर्भ में वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी	प्रो.एस.वी.एस.एस.नारायण राजू	78
41	**विश्व भाषा के रूप में हिन्दी**	**डॉ. के. अनिता**	79
42	**व्यावहारिक भाषा के रूप में हिन्दी में प्रशिक्षण**	**पुरेला सोमराजु**	81
43	**Sanskrit as Globalised Language**	**Dr. D. Jeevana Sri**	84

समर्थ हिन्दी असमर्थ हम
(रोजगार के संदर्भ में)

डॉ.आर.श्रीदेवी

मानव की सहज प्रवृत्ति होती है , जहाँ वह असफल होता है, वहाँ वह अपने बचाव के कोई-न-कोई कारण अवश्य ढूँढ लेता है। वह खुद को समर्थ और दूसरों को असमर्थ साबित करता है। उसकी यही प्रवृत्ति सदा से हिन्दी के प्रति भी रही है। हिन्दी में रोजगार के अवसरों के विषय में यह कहा जाता है कि वह रोजगार दिलाने में अक्षम है। एक राष्ट्रभाषा क्या कभी रोजगार दिलाने में अक्षम हो सकती है? फिर प्रांतीय भाषाओं की क्या स्थिति होगी? आप सोच सकते हैं। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। अत: संपर्क भाषा के रूप में सारे भारत और विदेशों में भी बोली जाती है। ऐसी स्थिति में उसमें रोजगार के अवसर काफी हैं। दुख की बात है कि आज बहुत से लोगों को इसकी जानकारी नहीं है। कुछ लोग जानते भी हैं, तो इस विषय की जानकारी दूसरों को नहीं देना चाहते। पर कोई बात नहीं आज तकनीकि और संचार साधनों का इतना प्रचार-प्रसार हो रहा है कि कोई भी विषय हम घर बैठे ही इंटरनेट के माध्यम से जान सकते हैं। हिन्दी में आज रोजगार के कई माध्यम हैं -

1. सभी केन्द्रीय संस्थानों में हिन्दी टाइपिस्ट, अनुवादक और हिन्दी अफसर का पद अवश्य होता है।
2. कुछ निजी और अर्धसरकारी संस्थाओं में भी ये ही पद विद्यमान हैं।
3. सभी बैंकों में भी हिन्दी अनुवादक और हिन्दी अधिकारी का पद अवश्य होता है।
4. सभी राज्यों में त्रिभाषा सूत्र लागू होता है। अत: वहाँ सभी निजी, सरकारी और केन्द्र सरकारी स्कूलों में अनिवार्य रूप से 10 वीं कक्षा तक हिन्दी पढाने की आवश्यकता है। अत: वहाँ एक वर्ग - 1 और वर्ग -2 शिक्षक अवश्य ही होता है। अर्थात सभी स्कूलों में हिन्दी शिक्षकों का पद अवश्य ही रहेगा।
5. इसके अलावा विभिन्न मंत्रालयों में भी हिन्दी शिक्षकों की आवश्यकता होती है।
6. हमारी राष्ट्रभाषा को विश्व भाषा के पटल पर बैठाने के लिए बहुत से अनुवादकों की आवश्यकता है।
7. अन्य भाषा में प्राप्त पुस्तकों को हिन्दी में अनुवाद करने हेतु भी बहुत से अनुवादकों की आवश्यकता है।
8. आज हिन्दी टाइपिंग के लिए भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पडता है। अत: टाइपिंग की आवश्यकता हर क्षेत्र में विद्यमान है।

उपरोक्त विषयों की जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी एक ऐसा विषय है जिसमें रोजगार के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध हैं, किन्तु कुछ भ्रामक स्थिति बनी हुई है। जिसके कारण लेगों में हिन्दी के प्रति अविश्वास की भावना घर कर गयी है। हिन्दी भाषा रोजगार की भाषा है और आगे भी रहेगी। इस दिशा में और अधिक प्रयास की आवश्यकता है। सबसे पहले हम अपनी प्रांतीय भावना से बाहर निकल राष्ट्रभाषा को दिल से स्वीकार करें। तभी हिन्दी की उन्नति में रुकावटें कम होंगी। सभी निजी और सरकारी कॉलेजों में भी हिन्दी को

चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन - २०१७

The Fourth International Hindi Conference - 2017

January 6-8, 2017
GITAM University, Visakhapatnam, India.

अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन
शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य, भाषा-योज़ना और कार्यक्रम - विस्तार

Teaching Hindi as Another Language
Pedagogical Perspectives, Language Planning and Program Development

स्मारिका

SOUVENIR

Jointly Organized by

सत्यमेव जयते
न ग का स
विशाखापट्टनम

GITAM University, Visakhapatnam

लोक नायक् फौंडेषन्
LOK NAYAK FOUNDATION

हिंदी संगम प्रतिष्ठान
Hindi Sangam Foundation

संदेश

एम. वेंकैया नायडु
M. VENKAIAH NAIDU

शहरी विकास,
आवास और शहरी गरीबी उपशमन एवं
सूचना एवं प्रसारण मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT,
HOUSING & URBAN POVERTY ALLEVIATION
AND INFORMATION AND BROADCASTING
GOVERNMENT OF INDIA

राष्ट्र भाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का विशेष महत्व है। भारत जैसे बहु भाषा-भाषी देश में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भावना की पुष्टि करने और सांस्कृतिक ऐक्य-संधान को संभव बनाने के लिए हिन्दी का समर्थन करना और हिन्दीतर प्रान्तों में भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना अनिवार्य है। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान देशवासियों में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार कर उन्हें एकजुट हो कर स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने की प्रेरणा दे कर राष्ट्र भाषा हिन्दी ने अपनी विशिष्टता का द्योतन किया है। राष्ट्रीय आन्दोलन को त्वरा देने में हिन्दी की भूमिका को पहचान कर महात्मा गांधी और कई नेताओं ने दक्षिण के राज्यों में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार को एक राष्ट्रीय अभियान के रूप में स्वीकार किया है। आजादी की प्राप्ति के बाद देश-विदेशों में हिन्दी पढाई जा रही है और क्रमशः विश्व भाषा बनाने की दिशा में हिन्दी प्रस्थान करने लगी है।

अंग्रेजी तथा कई अन्य देशों की विकसित भाषाओं के समान वर्तमान युग में हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य का भी लेखन एवं प्रकाशन होने लगा है। संचार क्रान्ति एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिन्दी की उपयोगिता सिद्ध होने लगी है। सूचना एवं प्रसारण के क्षेत्र में हिन्दी की सक्रियता सर्वविदित है। प्रसन्नता की बात यह है कि अब हिन्दी देश-विदेश में रोजगार दिलानेवाली भाषा बन गयी है। हिन्दीतर प्रान्तों और विदोशों में भी राजभाषा, द्वितीय भाषा अथवा अन्य भाषा के रूप में हिन्दी के पठन-पाठन की आवश्यकता है। अन्य भाषा के रूप में हिन्दी के अध्ययन एवं अध्यायन में उत्पन्न समस्याओं को दूर करने की आवश्यकता है। पाठ्यांशों का निर्धारण, वर्तनी और व्याकरण संबंधी दोषों का निवारण, हिन्दी के अध्ययन में रुचि, अपेक्षित मात्रा में हिन्दी अध्यापकों की नियुक्ति, अध्यापकों का प्रशिक्षण, पाठ्य-पुस्तकों तथा हिन्दी पत्रिकाओं की उपलब्धि, हिन्दी छात्रों को प्रोत्साहन देना आदि तथ्यों पर प्रकाश डालने और हिन्दी के शैक्षणिक संदर्भों से जुडे कई अंशों पर विचार-विमर्श करने की आवश्यकता को दृष्टि में रख कर गीतम विश्वविद्यालय, हिन्दी संगम प्रतिष्ठान, न.रा.का.स, विशाखपट्टणम और लोकनायक फाउण्डेशन विशाखपट्टणम के संयुक्त तत्वावधान में जनवरी **2017** में गीतम विश्वविद्यालय में आयोजित होनेवाली चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन की सफलता की मैं कामना करता हूँ। मेरा विश्वास है कि सम्मेलन के विषय से संवद्ध सभी अंशों की विस्तृत चर्चा होगी और विद्वान प्रतिभागियों के विचारों से अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समुदाय अवश्य लाभान्वित होगा। इस अवसर पर मैं इस अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के अयोजकों को बधाई देता हूँ।

एम.वेंकय्या नायुडू

संदेश

Ganta Srinivasa Rao
MINISTER FOR HUMAN
RESOURCE DEVELOPMENT
(Primary Education, Secondary Education,
Higher & Technical Education)
GOVERNMENT OF ANDHRA PRADESH

South H-Block (South Wing),
2nd Floor, Room No. 310,
A.P. Secretariat, Hyderabad - 500 022
Andhra Pradesh, INDIA.
Office : +91-40-23221175
Fax : +91-40-23450188
E-mail : gantainframin@gmail.com
gantahrdmin@gmail.com

विशाखपट्टणम्
दि. 7-12-2016

हिन्दी संगम प्रतिष्ठान, गीतम विश्वविद्यालय, विशाखा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और लोकनायक फाउण्डेशन, विशाखपट्टणम् के संयुक्त तत्वावधान में दि. 6 , 7 और 8 जनवरी 2017 को **"अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन, शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य, भाषा- योजना और कार्यक्रम - विस्तार"** शीर्षक **चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन** का आयोजन गीतम विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम् में होना आन्ध्र प्रदेश के हिन्दी अध्यापकों, हिन्दी लेखकों और हिन्दी छात्रों केलिए उपयोगी होगा, यह मेरा विश्वास है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि देश-विदेश के कई विश्वविद्यालयों के आचार्य और हिन्दी भाषा-प्रेमी इस सम्मेलन में भाग लेकर अन्य भाषा के रूप में हिन्दी के पठन-पाठन से संबंधित समस्याओं और उसके शैक्षणिक संदर्भों पर विद्वत्तापूर्ण आलेख प्रस्तुत करेंगे और भाषा-योजना व हिन्दी-शिक्षण संबंधी नीतियों पर भी विचार-विमर्श करेंगे। भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच एकता स्थापित करने में हिन्दी की भूमिका सराहनीय रही है। भारत की अखण्डता को बनाये रखने में हिन्दी-प्रचार की भूमिका निर्णायक सिद्ध हुई है। इक्कीसवीं सदी की माँग के अनुरूप सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में उपयोगी भाषा के रूप में हिन्दी को समृद्ध बनाने की आवश्यकता है। विशाखपट्टणम् में आयोजित इस सम्मेलन में देश-विदेश के हिन्दी विद्वानों का मैं सहर्ष स्वागत करता हूँ । मेरा विश्वास है कि भाषा-विशेषज्ञों के विचारों से वर्तमान पीढी के हिन्दी छात्र अवश्य लाभान्वित होंगे। मैं इस चतुर्थ अंतराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के सभी आयोजकों का अभिनंदन करता हूँ।

गंटा श्रीनिवास राव,
मानव संसाधन विकास मंत्री,
आन्ध्र प्रदेश राज्य सरकार,
अमरावती।

हिंदी-शिक्षण की अद्भुत विधियाँ

डॉ.आर.श्रीदेवी

व्याख्याता ***हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय,***

विशाखापट्टणम

भाषा, समाज और संस्कृति से निर्मित होती है। अतः समाज, संस्कृति और भाषा का अटूट संबंध है। मानव समाज के विकास के साथ ही भाषा का विकास भी जुड़ा है । विश्व की भाषाओं का वर्तमान स्वरूप एक लम्बी विकास यात्रा का परिणाम है । भाषा परिवर्तनशील है । अतः उसका स्वरूप सदैव निश्चित नहीं होता । भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक **भाषाविज्ञान** में भाषा की प्रकृति का सविस्तार परिचय दिया है । हिंदी भी इसका अपवाद नहीं है । हिंदी ने आज अनेक पड़ावों से गुजरते हुए एक नवीन रूप धारण किया है । भूमण्डलीकरण के इस दौर में अन्य संस्कृतियों और भाषाओं के संयोग से हिंदी की एक नई छवि उभरकर आयी । इस नई हिंदी के प्रति आज सारी दुनिया आकर्षित है । हिंदी का यह आकर्षण ही हिंदी-शिक्षण की विभिन्न विधियों की खोज में सहायक सिद्ध हुआ है । कहा गया है- "जहाँ चाह है, वहाँ राह है।" इस युक्ति को चरितार्थ करते हुए आज हिंदी-शिक्षण की कई विधियाँ हमारे समक्ष प्रस्तुत हैं । प्रत्यक्ष पद्धति, ध्वनि पद्धति, वाद-विवाद पद्धति, मौखिक पद्धति, अनुवाद पद्धति, रूप-गठन पद्धति, वैस्ट पद्धति, चलचित्र पद्धति, हिन्दी-नाट्य-मंचन पद्धति आदि सबसे सरल पद्धतियों के प्रयोग से हिंदी आसानी से सीखी जा सकती है ।

GITAM UNIVERSITY
(Estd. u/s 3 of the UGC Act, 1956)
VISAKHAPATNAM • HYDERABAD • BENGALURU
Accredited by NAAC with 'A' Grade

A University committed to Excellence

The Fourth International Hindi Conference - 2017

GITAM UNIVERSITY, Gandhi Nagar Campus, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh, INDIA
Phone: (+91-891) 2790 101, 2790 202, website : www.gitam.edu

Lok Nayak Foundation

8-28-4, Balajinagar,
Visakhapatnam-530 003
e-mail : ylp1953@gmail.com
Ph : 9849067343

Hindi Sangam Foundation

4 Melville Road,
Edison, NJ 08816
USA
Tel : 001-732-318-9891

B-204, Media Housing Society,
Plot 18A, Sector-7, Dwaraka,
New Delhi - 110075, India
Tel : 91-8860546791

ISBN : 978-93-83637-60-7

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

विश्व मैत्री

9 - 10 दिसम्बर 2016

संपादक
डॉ. पी. के. जयलक्ष्मी

अनुक्रमणिका

1.	हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का वर्चस्व : वैश्वीकरण के वर्तमान संदर्भ में	डॉ एस.कृष्णबाबु	1
2.	हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव	प्रो.आर.एस.सर्राज	4
3.	सूचना प्रौद्योगिकी -हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ	डॉ.पी.के.जयलक्ष्मी	6
4.	सोफिया (बुल्गारिया) में हिन्दी शिक्षण : समस्याएँ और समाधान	प्रो.एस.वी.एस.एस. नारायण राजु	8
5.	हिन्दी भाषा पर वैश्वीकरण का प्रभाव	डॉ. सी. अन्नपूर्णा	10
6.	वैश्वीकरण और हिन्दी	आचार्या.बी.मोहिनी	12
7.	विश्व मैत्री की भाषा हिन्दी	प्रो. एन. सत्यनारायण	14
8.	हिन्दी भाषा की वैश्विक यात्रा	डॉ.ई.जी.डब्ल्यू. पी. गुणसेना	15
9.	भाषा प्रौद्योगिकी अनुवाद	डॉ अनवर अहमद सिद्की	17
10.	भारतीय भाषाओं के बीच सामंजस्य और अनुवाद की भूमिका - हिन्दी तथा तमिल भाषाओं के बीच अनुवाद करने में उत्पन्न चुनौतियाँ	डॉ.के.एस.प्रणतार्तिहरन	19
11.	वैश्वीकरण और हिन्दी	डॉ. कुमार नागेश्वर राव	21
12.	वैश्विकता के परिवेश में परिवर्तित हिन्दी	डॉ के.सुधा	22
13.	विश्व भाषा के रूप में हिन्दी 'आवश्यकता और अपेक्षा'	डॉ. बी. सुमा	24
14.	हिन्दी की वैश्विक दृष्टि	डॉ.काकानी श्री कृष्ण	25
15.	हिन्दी की ई- पत्रिकाओं का वैभव - वैश्विक स्तर पर	डॉ.बी.लक्ष्मी	26
16.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक भाषा का महत्व : मृदुला गर्ग की कहानियों का संदर्भ	डॉ.एस.दीप्ति	27
17.	हिन्दी का बदलता स्वरूप : वैश्वीकरण के संदर्भ में ...	डॉ.शेख़ बेनज़ीर	29
18.	वैश्विक संदर्भों में हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता	डॉ.के.पद्मा रानी	31
19.	वैश्विक बाजार और भारतीय भाषाएँ	डॉ टी. अरुणा कुमारी	33
20.	मॉरिशस के कहानीकारों से हिन्दी कथा साहित्य का विकास: एक अध्ययन	डॉ.के.वी.कृष्णमोहन	35
21.	हिन्दी का उज्जवल भविष्य	डॉ.आर. श्रीदेवी	37
22.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा	डॉ.आर.एन.वी.एस.राजाराव	39
23.	सूचना-प्रौद्योगिकी और हिन्दी	डॉ. सुमित्रा	41
24.	कंम्प्यूटर और इन्टरनेटी साहित्य का भाषिक स्वरूप और हिन्दी	डॉ. षम्स अख्तर	43
25.	भारतीय भाषाओं में कंप्यूटफर और विश्वजाल का विकास	परवीन शर्मीला	45
26.	भाषा-शिक्षण योजना और अन्य भाषा के रूप में हिन्दी	डॉ. ए.एस. राव	46
27.	भूमंडलीकरण का भाषिक परिप्रेक्ष्य और हिन्दी	डॉ.डी.सत्यलता	48
28.	वैश्वीकरण में विश्व-पटल पर हिन्दी	डॉ. हरि रामप्रसाद पसुपुलेटी	50
29.	हिन्दी भाषा पर वैश्वीकरण का प्रभाव	डॉ कांचनमाला	52
30.	अंतर्राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से हिन्दी भाषा की ख्याति	डॉ वी सरोजनी	53
31.	भारतीय नाट्य साहित्य में वैश्वीकरण का स्वरूप व भाषाई संदर्भ	डॉ दुर्गा शारदा चक्किल	55
32.	वैश्वीकरण और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा का बदलता मिजाज स्वरूप	डॉ.ए.निर्मला	57
33.	भारतीय भाषाओं का वैश्वीकरण	बी हेमलता	58
34.	वैश्वीकरण के परिदृश्य में अनुवाद की भूमिका	डॉ अन्नदासु सरला देवी	59

21. हिन्दी का उज्जवल भविष्य

डॉ.आर. श्रीदेवी, गेस्ट फैकल्टी,
हिन्दी विभाग, आंध्रविश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी स्वयं में एक सार्थक और व्यापक भाषा है। हिन्दी को भारतीय आत्मा की वाणी कहना भी समीचीन होगा। वास्तव में यह भारतीय जनता के हृदय और मन की भाषा है। यह हमारे राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति है। तुलसी, जायसी, सूर, मीरा और कबीर जैसे संतों ने इसे सँवारा था। जहाँ दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर, भारतेंदु जैसे महापुरूषों ने राष्ट्र में इसकी शक्ति का बोध कराया था। वहीं राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी और देश के अन्य लोकनायकों ने राष्ट्रीय सम्मान माध्यम माना था। अत: संविधान में इसकी स्थिति राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में स्थापित हुई है।

हिन्दी का आज इतना महत्व बढ गया है कि अब यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकी है। मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी और अफ्रीका के कई देशों में यह सबसे अधिक बोली जाती है। अत: वे लोग इस बात का गर्व करते हैं कि हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय बनाने का श्रेय उन्हीं को है। चीनी के बाद विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है। आज हिन्दी अनेक देशों में बोली जाती है। अनेक देशों में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। हिन्दी भारत के चिंतन और दर्शन का मूल स्त्रोत है और इसी के द्वारा भारत की आत्मा को पहचाना जा सकता है। यही कारण है कि दुनिया भर के बडे-बडे स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में हिन्दी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

देश - विदेशों में हिन्दी के प्रचार - प्रसार और उसके जानने समझने और बोलने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। इस तथ्य की पुष्टि इस बात से होती है कि विभिन्न देशों के सहयोग से भारत दस बार विश्व हिन्दी सम्मेलन आयोजित कर चुका है। अब वह मॉरीशस में होने वाले 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन की तैयारी में लगा हुआ है। छठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के लंदन में और आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन के न्यूयार्क में आयोजन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी अब विश्व स्तर पर उन देशों में भी प्रतिष्ठित होती जा रही है, जिन देशों में अंग्रेजी का महत्व अत्यधिक है। विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन के संदर्भ में यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात है कि भारत की स्वतंत्रता के बीसवीं शताब्दी के लगभग 50 वर्षों में केवल पाँच विश्व हिन्दी सम्मेलन ही आयोजित हो पाए हैं। वहीं इक्कीसवीं सदी के आरंभ के केवल 16 वर्षों में ही पाँच विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन हो चुका है और दो ही वर्षों में ग्यारहवें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन भी होने वाला है। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि विश्व स्तर पर हिन्दी के प्रचार प्रसार में गतिशीलता आयी है, वहीं उसका उज्ज्वल भविष्य भी निश्चित होता जा रहा है।

विदेशों में भी आज हिन्दी शिक्षण का कार्यक्रम तेजी से बढने लगा है। केंद्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा आज पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से विदेशियों को हिन्दी सिखाई जा रही है। भारत के संविधान की धारा 343 (1) के अनुसार 26 जनवरी 1950 से यानी संविधान के लागू होने के साथ ही भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी बन गई थी। संविधान की ही धारा 351 में यह प्रावधान भी किया गया है कि केंद्र सरकार को हिन्दी भाषा का प्रचार बढाना है और उसका विकास करना है। संविधान के उक्त प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए ही राजभाषा अधिनियम 1963 में बनाया गया। फिर 1967 में उसके संशोधन के समय संसद के दोनों सदनों द्वारा एक संकल्प भी पारित किया, जो 18 जनवरी 1968 को राजपत्र द्वारा अधिसूचित भी किया गया कि इस पैरा- 1 के अनुसार केंद्र सरकारी कार्यालयों और उनके संबंधित बैंकों, निगमों तथा अन्य संस्थानों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढाने का गहन प्रयत्न किया जा सके।

Vishw Maitri - International Seminar Souvenir

Edited by : Dr. P.K. Jayalakshmi, HOD Hindi, SJC

ISBN : 978-93-83637-60-7

9 789383 637607

Publisher :

Quality Books Publishers & Distributors

15, Siddhartha Nagar, Gooba Garden,

Kalyanpur, Kanpur-208016 (U.P.)

Mob : 09044344050

Email : qualitybooks.knp@gmail.com

Printers :

Friendship Graphics

Visakhapatnam

0891-6643352

---

* इस विशेषांक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक-मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।